RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹: 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक

आषाढ़ - श्रावण, विक्रम संवत् 2082 (जुलाई -2025)

पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

गुरु पूर्णिमा

प्रतिभा उन्नयन, स्वत्व जागरण और राष्ट्रबोध का पर्व

अभ्यासाद्धार्यते विद्या कुलं शीलेन धार्यते।
गुणेन ज्ञायते त्वार्यः कोपो नेत्रेण गम्यते॥

विद्या की प्राप्ति निरंतर अभ्यास से होती है। कुल की स्थिरता/यश उत्तम गुण-कर्म से होती है। आर्य की पहचान श्रेष्ठ गुणों से और क्रोध की नेत्रों से हो जाती है।

आषाढ़/श्रावण
वि.सं. २०८२
शक सं. १९४७

जुलाई २०२५
वर्षा ऋतु

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		१ आषाढ़ शुक्ल पक्ष षष्ठी	२ आषाढ़ शुक्ल पक्ष सप्तमी	३ आषाढ़ शुक्ल पक्ष अष्टमी	अल्लूरी सीताराम राजू जयंती ४ आषाढ़ शुक्ल पक्ष नवमी	नवरात्रि पारण ५ आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी
देवशयनी एकादशी व्रत ६ आषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशी	७ आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	जयापार्वती व्रत प्रारम्भ, भौम प्रदोष व्रत ८ आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	९ आषाढ़ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	कोकिला व्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा १० आषाढ़ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	११ श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	१२ श्रावण कृष्ण पक्ष द्वितीया
जयापार्वती व्रत समाप्त १३ श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत १४ श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्थी	१५ श्रावण कृष्ण पक्ष पंचमी	कर्क संक्रान्ति १६ श्रावण कृष्ण पक्ष षष्ठी	१७ श्रावण कृष्ण पक्ष सप्तमी	१८ श्रावण कृष्ण पक्ष अष्टमी	१९ श्रावण कृष्ण पक्ष नवमी
२० श्रावण कृष्ण पक्ष दशमी	कामिका एकादशी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत २१ श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी	भौम प्रदोष व्रत २२ श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	चन्द्रशेखर आज़ाद जयंती, बाल गंगाधर तिलक जयंती २३ श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	२४ श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या	२५ श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	स्वामी करपात्री जयंती २६ श्रावण शुक्ल पक्ष द्वितीया
हरियाली तीज २७ श्रावण शुक्ल पक्ष तृतीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत २८ श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्थी	नाग पंचमी २९ श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	श्री कल्कि जयंती ३० श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	गोस्वामी तुलसीदास जयंती ३१ श्रावण शुक्ल पक्ष सप्तमी		

dharmkshetra.com

प्रेरणा विचार

वर्ष -3, अंक - 07

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
अशोक सिन्हा

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।
संपादक

इस अंक में

गुरु पूर्णिमा : प्रतिभा उन्नयन, स्वत्व जागरण और राष्ट्रबोध का दिन - 05

ईरान-इजराइल युद्ध में भारत की निर्णायक भूमिका का समय -10

संघ पद्धति के महत्वपूर्ण स्तम्भ है संवाद, समन्वय और सेवाभाव-22

न्याय पूर्ण व्यवहार और निष्पक्षता -26

युवा चेतना और अध्यात्म : भारत का आर्थिक सूत्र 07
ईरान इजराइल संघर्ष....09
जनगणना में स्व-गणना की सुविधा....12
भारत की राष्ट्रनीति....14
व्योम डिजिटल सर्विसेज : विपरीत परिस्थितियों से निकली भारत की....17
संघ जैसा मैंने देखा....18
लघु कथा -सिकंदरपुर : एक बदला हुआ गांव 21
तीर्थ पर्यटनों का सामाजिक एवं आर्थिक योगदान....24
महिलाओं में पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम एवं उसका प्राकृतिक उपचार....28
सांस्कृतिक विविधताओं को उजागर करते पर्व....30
राष्ट्रवाद की नई रेखाएं : विचार से व्यापार तक....32
पुस्तक समीक्षा....33
लघु कथा एवं कविता....34

भारत को युद्ध क्षेत्र बनने से बचाना अनिवार्य

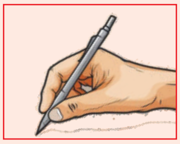

कनाडा में हालिया आयोजित जी-7 देशों के सम्मेलन में भी यह स्पष्ट किया गया कि जहां इजराइल को आत्मरक्षा का अधिकार है वहीं ईरान को परमाणु हथियार रखने का अधिकार नहीं है। विश्व जनमत का ईरान के विरोध में होने का मूल कारण शायद यह है कि ईरान जैसे देशों के पास ये हथियार होने से इस बात का खतरा लगातार बना रहेगा कि कब ये हथियार इनके छदम आतंकी समूहों जैसे हूति, हमास, हिजबुल्ला आदि तक पहुंच जाएं और दुनिया तथा पूरी मानवता के लिए खतरा बन जाएं। ईरान और पाकिस्तान जैसे आतंकपरस्त देशों के बारे में यह आशंका निर्मूल तो कतई नहीं है।

दुनिया के सामने आज यक्ष प्रश्न है कि, दुनिया भर मे बढ़ते संघर्ष कहीं नए विश्व युद्ध की आहट तो नहीं ? लंबे समय से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध और मध्य पूर्व में हालिया भड़का ईरान-इजराइल युद्ध दुनिया को विश्व-युद्ध के मुहाने तक ले पहुंचा है। सामान्य संघर्षो से इतर इन संघर्षों में परमाणु हथियारों के विनाशकारी दुरुपयोग का खतरा मंडरा रहा है। दुनिया एक बार फिर वर्ष 1945 के हिरोशिमा के लिटिल बॉय और नागासाकी में डाले गए फैट मैन जैसे परमाणु बमों की विभीषिका याद कर सिहर रही है। परमाणु हथियारों का वही पुराना खौफ दुनिया में फिर से दिखने लगा है। इजराइल स्वयं तो परमाणु सम्पन्न है परंतु ईरान के परमाणु हथियारों को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है। ईरान के संबंध में इजराइल की यह सोच अमेरिका की सोच से पूरी तरह मेल खाती है। राष्ट्रपति पद के पहले कार्यकाल के चुनावी अभियान में ट्रम्प ने कहा था, "मैं ईरान को परमाणु हथियार प्राप्त करने से रोकूंगा"। अमेरिका ने ईरान के फोर्डो, नतांज और इस्फहान स्थित तीन परमाणु ठिकानों पर बंकर बस्टर बंबों से हमले लिए। उत्साही ट्रंप ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए घोषणा की कि ईरान के प्रमुख परमाणु ठिकाने 'पूरी तरह से नष्ट' हो गए हैं। ईरान ने इन हमलों की पुष्टि तो की परंतु नुकसान का ब्योरा नहीं दिया। ट्रम्प की घोषणा के उलट अमेरिका सहित दुनिया भर के मीडिया तथा खुफिया संगठनों के अनुसार ईरान के परमाणु ठिकानों को नुकसान तो अवश्य पहुंचा है परंतु इससे ईरान का परमाणु कार्यक्रम बंद न होकर इसमें मात्र कुछ महीने या साल का विलंब होगा।

आज विश्व जनमत भी ईरान के परमाणु सम्पन्न होने के विरोध में है। कनाडा में हालिया आयोजित जी-7 देशों के सम्मेलन में भी यह स्पष्ट किया गया कि जहां इजराइल को आत्मरक्षा का अधिकार है वहीं ईरान को परमाणु हथियार रखने का अधिकार नहीं है। विश्व जनमत का ईरान के विरोध में होने का प्रमुख कारण शायद यह है कि ईरान जैसे देशों के पास ये हथियार होने से इस बात का खतरा लगातार बना रहेगा कि कब ये हथियार इनके छदम आतंकी समूहों जैसे हूति, हमास, हिजबुल्ला आदि तक पहुंच जाएं और दुनिया तथा पूरी मानवता के लिए खतरा बन जाएं। ईरान और पाकिस्तान जैसे आतंकपरस्त देशों के बारे में यह आशंका निर्मूल तो कतई नहीं है। पाकिस्तान बार-बार परमाणु सम्पन्न होने का ढोल पीटता है और परमाणु युद्ध की धमकी के साये में अपने आतंकी उद्योग को यथावत चलाना चाहता है। परमाणु हथियारों तक पहुंच होने की स्थिति में इन देशों और आतंकी समूहों का गठजोड़ दुनिया को किस नरक में धकेल सकता है इसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है। परंतु सुविधा के अनुसार पाकिस्तान तथा अन्य आतंकी देशों को अमेरिका तथा पश्चिमी देशों द्वारा प्रश्रय तथा बढ़ावा दिया जाना आतंकवाद के विरुद्ध उनकी दोगली नीति को उजागर करता है। भारत को ऐसे रंगे-शियारों की कुटिल चालों से सावधान रहना होगा। दुनिया में शांति और सुरक्षा के लिए ईरान और पाकिस्तान जैसे देशों के परमाणु हथियारों और संयत्रों को पूर्णत: नष्ट करने या इन्हें अंतर्राष्ट्रीय परमाणु एजेंसी द्वारा अपने नियंत्रण में लिया जाना विकल्प नहीं बल्कि आवश्यकता है। ऐसे में भारत को किसी भावी युद्ध का युद्ध क्षेत्र न बनने देने के लिए अपने कदम फूक-फूक कर रखने होंगे। ■

गुरु पूर्णिमा : प्रतिभा उन्नयन, स्वत्व जागरण और राष्ट्रबोध का पर्व

योग्य मनुष्य, प्राणी, ग्रंथ अथवा ध्वज भी हो सकते हैं गुरु के प्रतीक

रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर की और यात्रा आरंभ करने का दिन गुरु पूर्णिमा है। ऐसी जीवन यात्रा आरंभ करने का दिन जो व्यक्ति को आत्मबोध, आत्मज्ञान और आत्म गौरव का भान कराती है और जो ऐसे आदर्शमय व्यक्तित्व निर्माण के लिये मार्गदर्शन करते हैं वे गुरु हैं। गुरु मनुष्य भी हो सकते हैं, और कोई प्रतीक भी। संसार में कोई अन्य प्राणी अथवा प्रतीक भी।

संस्कृत में 'गु' धातु है। इसका अर्थ होता है अंधकार। 'रु' धातु का अर्थ है प्रकाश की ओर। दोनों की संधि से 'गुरु' शब्द बना अर्थात् जो अंधकार से प्रकाश की ओर यात्रा का निमित्त है वह गुरु। अज्ञान के अंधकार से ज्ञान की ओर यात्रा आरंभ करने के लिये आषाढ़ माह की पूर्णिमा की तिथि निर्धारित की गई। तिथि का निर्धारण गहरे अनुसंधान का निष्कर्ष है। वर्ष की सभी बारह पूर्णिमाओं में केवल आषाढ़ की पूर्णिमा ऐसी है, जिसमें चंद्रमा का शुभ्र प्रकाश धरती पर सबसे कम आता है। चन्द्रमा से आने वाला प्रकाश कम नहीं होता। लेकिन वर्षा के बादलों से चन्द्रमा ढँक जाता है और धरती पर आने वाले प्रकाश का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। यह कृत्रिम अवरोध है। इसी प्रकार संसार के विविध प्रकार के भ्रम और आकर्षण मनुष्य का ज्ञान का मार्ग अवरुद्ध कर देते हैं। इनसे व्यक्ति भटक जाता है। मनुष्य को अज्ञान के अंधकार से मुक्त कर ज्ञान के प्रकाश में लाने के निमित्त गुरु हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा के प्रकाश को रोकने वाले बादल स्थाई नहीं होते, अस्थाई होता है, प्रकाश मार्ग को इस कृत्रिम अवरोध से मुक्त करने के

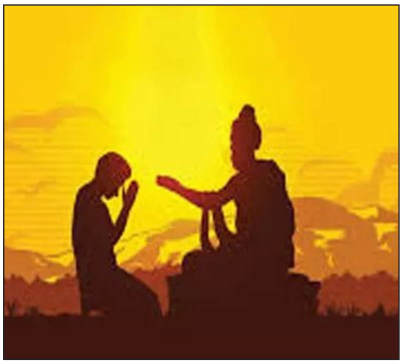

निमित्त पवनदेव बनते हैं। वे अपने झौकों से बादलों को बहा ले जाते हैं। ठीक इसी प्रकार मनुष्य की आँखो पर छाये अज्ञान के बादलों को छाँटने का निमित्त गुरु होते हैं। मनुष्य के ज्ञान और बुद्धि पर पड़े अवरोध स्वयं नहीं हटते, उन्हें हटाने के लिये कोई प्रयत्न चाहिए, कोई निमित्त चाहिए। अज्ञान का हरण और स्वज्ञान के इस जाग्रतकर्ता को गुरु कहा गया है। गुरु अज्ञानता के अंधकार की सभी परतें हटा कर शिष्य को उसके स्वत्व से साक्षात्कार कराता है। उसकी विशिष्टता को नये आयाम, नयी ऊँचाइयाँ देने में मार्ग दर्शन करता है। गुरु और गुरुपूर्णिमा इसी का प्रतीक है।

शिक्षक, आचार्य, गुरु और सद्गुरु में अंतर : गुरुत्व परंपरा में एक बात महत्वपूर्ण है। शिक्षक, आचार्य, गुरू और सद्गुरु में अंतर होता है। शिक्षा और ज्ञान में अंतर है । शिक्षा केवल सैद्धांतिक होती है। पाठ्यक्रम में यदि कुछ तथ्य या आधारहीन है तब भी शिक्षक उसी अनुसार अपना कार्य करते हैं। जबकि आचार्य पाठ्यक्रम के साथ व्यवहारिक पक्ष को सम्मिलित कर व्यक्तित्व निर्माण पर भी ध्यान देते हैं। गुरु इनसे बहुत आगे हैं। वे पाठ्यक्रम पर नहीं, विद्यार्थी की प्राकृतिक प्रतिभा, क्षमता और रुचि का आकलन करते हैं, उसकी मौलिक प्रतिभा को जाग्रत करते है। फिर उसके अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्धारण करते हैं। युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तीनों थे तो एक ही कक्षा में थे, पर गुरु द्रोणाचार्य ने तीनों की प्रतिभा और क्षमता के अनुरूप अलग-अलग अस्त्र शस्त्र में प्रवीण बनाया। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से केवल चेहरे की बनावट, बोली, रुचि, पसंद नापसंद या डीएनए में ही अलग नहीं होता। वह प्राकृतिक विशेषताओं में भी अलग और विशिष्ट होता है। गुरु शिक्षा आरंभ करने से पहले शिक्षार्थी की मौलिक प्रतिभा, क्षमता, मेधा और प्रज्ञा का आकलन करते हैं। और फिर संबंधित शिष्य को उसके मूल तत्व का आभास कराते हैं, उसके स्वत्व से साक्षात्कार कराते हैं। तब शिक्षा आरंभ करते हैं। जिससे वह व्यक्ति अपने जन्म जीवन को योग्य बनाता है। सद्गुरु इससे भी एक कदम आगे होते हैं। गुरु ज्ञान दान केवल लौकिक जगत तक सीमित होता है। एक शिष्य संसार में कैसे श्रेष्ठ बने संसार की प्रकृति, प्राणियों और पदार्थ सबसे कैसे तादात्म्य स्थापित करे यह सब ज्ञान गुरु देते हैं। जबकि सद्गुरू लौकिक के साथ अलौकिक सृष्टि का भी मार्ग दर्शन कराते हैं। संसार के आगे क्या है ? दृश्य जगत के आगे अदृश्य की शक्ति क्या है। यह ज्ञान सद्गुरु से मिलता है।

अर्जुन के गुरु द्रोणाचार्य हैं। पर जब योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया तब अर्जुन ने कहा-'मुझे सद्गुरु की भाँति उपदेश करें।' तब ही भगवान श्रीकृष्ण ने 'विभूति' और 'विराट' से परिचय कराया। इस प्रकार संसार में जीने योग्य बनाने, सफलता प्राप्त करने, लौकिक जगत को समझने और अलौकिक जगत का साक्षात्कार कराने वाली विभूति को गुरु कहा गया और उनके प्रति आभार प्रकट करने की तिथि है गुरु पूर्णिमा ।

गुरु के प्रतीक : प्राणी, प्रकृति, ग्रंथ और ध्वज : भारतीय वाङ्मय में गुरु परंपरा के वाहक ऋषिगणों का उल्लेख मिलता है, लेकिन गुरु केवल ऋषि ही बनें अथवा केवल एक ही गुरु हों यह बंधन नहीं रहा। एक से अधिक गुरु और ऋषियों से इतर किसी प्रतीक या घटना को भी गुरु मानने की परंपरा रही है। पशु पक्षी और सेवक अथवा यज्ञ, ग्रंथ और ध्वज को भी गुरु का मानने की परंपरा है। भगवान् दत्तात्रेय जी के चौबीस, भगवान् परशुराम जी के सात और राजा जनक के तीन गुरु होने का वर्णन मिलता है। भगवान् दत्तात्रेय की चौबीस गुरु संख्या में पृथ्वी, जल, अग्नि, मधु मक्खी, श्वान् आदि को भी अपना गुरु मानकर कार्य संकल्प की सीख लेने का संदेश दिया। दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने अपने पिता महर्षि भृगु के साथ यज्ञ को भी गुरु माना । राजा जनक के तीन गुरु संख्या में प्रतीक के रूप में वेद भी गुरु हैं। ऋषिका देवहूति ने अपने पुत्र कपिल मुनि को माना। कहोड़ ऋषि ने अपने पुत्र अष्टावक्र को, आदि शंकराचार्य जी ने एक चाँडाल को गुरु समान आदर दिया और पंचकम् की रचना की । स्वामी विवेकानंद ने खेतड़ी की नृत्यांगना को माँ कहकर पुकारा और गुरु का सम्मान दिया।

इसी परंपरा के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 'ध्वज' को गुरु रूप में स्वीकारा। संघ स्वयंसेवक गुरु पूर्णिमा पर ध्वज का ही पूजन करते हैं। भारत में यह ध्वज पूजन परंपरा पहली नहीं है। भारत में अनादि काल से ध्वज को सम्मान का प्रतीक माना और इसकी रक्षा के लिये प्राणोत्सर्ग करने की घटनाओं से प्राचीन ग्रंथ भरे पड़े हैं। ध्वज नायक या राज्य की पहचान का प्रतीक होता है, जैसे गरुड़ ध्वज नारायण की, अरुण ध्वज सूर्य की पहचान रहें हैं। राष्ट्र के प्रतीक ध्वज को वंदन करने की परंपरा आचार्य चाणक्य से आरंभ हुई। आचार्य चाणक्य ने भगवा ध्वज को भारत राष्ट्र की पहचान और मान का प्रतीक प्रमाणित किया। जिस प्रकार ज्ञान के लिये कुछ प्रतीक भी माध्यम होते हैं। उसी प्रकार व्यक्ति, परिवार समाज, राष्ट्र और संस्कृति का प्रतीक ध्वज होता है। गरुड़ ध्वज से नारायण और अरुण ध्वज से सूर्य की पहचान होती है उसी प्रकार भगवा ध्वज भारत राष्ट्र की पहचान है। भगवा अग्नि शिखा का रंग होता है, सूर्योदय की आभा ऊषा का रंग होता है जो समता समानता का द्योतक होता है। अग्नि सभी को एकसा ताप देती है। सूर्य सबको समान प्रकाश और ऊर्जा देता है। इसलिए भारत ने अपनी ध्वजा का रंग भगवा स्वीकार किया। स्वाभिमान के जागरण का प्रतीक शब्द 'ध्वज' संस्कृत की 'ध्व' धातु से बनता है। इसका आशय धरती की केन्द्रीभूत शक्ति होता है। इसे धारण करने के कारण ही ऋग्वेद में धरती के लिये 'धावा' उच्चारण आया है। ध्वज किसी भी राष्ट्र और संस्कृति के गौरव और सम्मान का प्रतीक माना गया है। इससे आत्मगौरव और स्वाभिमान का बोध होता है।

जो व्यक्ति को स्वत्व के लिये प्रेरित करता है। यह बात आचार्य चाणक्य ने कही थी और इसी को आगे बढ़ाया राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डा हेडगेवार ने। उन्होंने कहा था 'जो आत्मबोध कराये वह गुरु है, मनुष्य या प्राणी का जीवन तो सीमित होता है। समय और आयु अवस्था उनकी क्षमता और ऊर्जा को प्रभावित करती है, अतएव गुरु चिरजीवी होना चाहिए।'

अष्टावक्र से मिले आत्मज्ञान के बाद इसी भाव के अनुरूप राजा जनक ने वेद को गुरुतुल्य आसन दिया। गुरुग्रंथ साहिब को गुरु स्थान का सम्मान देना इसी परंपरा का पालन है।

छद्म गुरु और सावधानी : संसार में अंधकार और प्रकाश साथ-साथ चलते हैं। इसका प्रतीक है अच्छाई और बुराई। वैदिक काल में देव और दैत्य दोनों रहें। प्रकृति इस रहस्यमय विशेषता से गुरु परंपरा भी अछूती नहीं। यदि कुछ सद्गुरु हैं तो कुछ छद्म गुरु भी। इसलिये गुरु का चयन करने में सावधानी होनी चाहिए। वर्तमान परिस्थिति में छद्म गुरुओं की मानों बाढ़ आ गई है। उनकी पहचान करना सरल है। केवल हमें अपनी आँखें खुली रखना है। गुरु अपने शिष्य की प्रतिभा और कौशल का विकास करके उसे उसके पैरों पर खड़ा करता है। जबकि छद्म गुरु शिष्य को कभी किसी ताबीज, कभी किसी औषधि से चमत्कार से कार्य संपन्नता की बातें करता है। दासत्व के गहरे अंधकार से अधिकांश भारतीय जनों का आत्मविश्वास और आत्म चेतना कुछ क्षीण हो गई है। इसी का लाभ छद्म गुरु उठाते हैं। आज जितनी आवश्यकता आत्मज्ञान की है उससे अधिक आवश्यकता स्वत्व बोध और पुरुषार्थ जागरण की है। उधार के सिन्दूर से कोई सौभाग्यवती नहीं हो सकती, वैशाखियों के सहारे कोई पर्वत की चोटी पर नहीं जा सकता उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र अपने स्वत्वबोध से ही श्रेष्ठता के शिखर पर पहुँचता है। आज भारतीय समाज जिन परिस्थितियों और षड्चंत्रों से जूझ रहा है। इसमें अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता है। किसी भीड़ के पीछे दौड़ने की बजाय ज्ञान के लिये आत्मज्ञान आवश्यक है। जो हमारे पुरुषार्थ पराक्रम को जाग्रत कर राष्ट्र स्वाभिमान का वाहक बने। वह कोई ऋषितुल्य विभूति हों, कोई सद्ग्रंथ हो अथवा ध्वज का कोई प्रतीक हो। आज जीवन की आपाधापी है। भौतिक सुख सुविधाओं के संघर्ष में आत्मगौरव कहीं छूट रहा है। इसके लिये आवश्यक हैं कि गुरु पूर्णिमा पर केवल गुरु वंदन तक सीमित न रहें। प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक बार आत्म चिंतन अवश्य करे, स्वयं के बारे में, परिवार के बारे में, परंपराओं के बारे में और अपने राष्ट्रगौरव के बारे में। और यदि कहीं चूक हो रही है तो उसकी पुनर्प्रतिष्ठा का संकल्प लेने से ही गुरु पूर्णिमा पर गुरु वंदन सार्थक होगा। ■

युवा चेतना और अध्यात्म : भारत का आर्थिक सूत्र

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त पूर्व उप प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

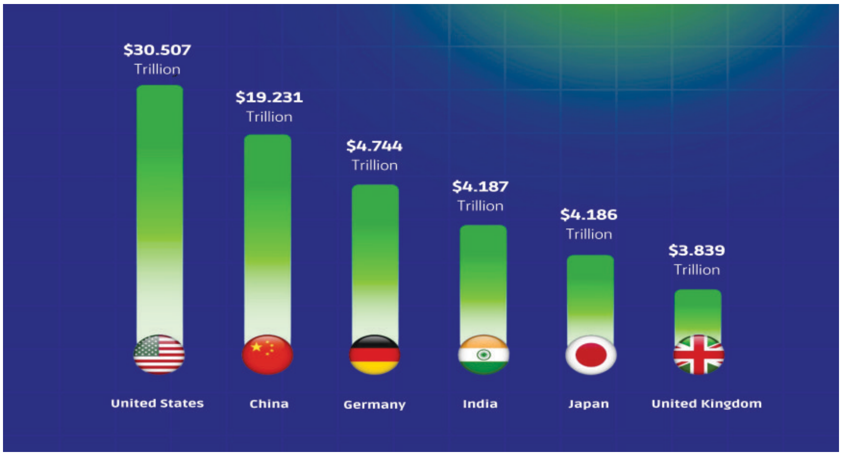

जापान की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और संभवत आगामी लगभग दो वर्षों के अंदर जर्मनी की अर्थव्यवस्था से आगे निकलकर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं, जिसके आधार पर यह अर्थव्यवस्थाएं विश्व में उच्च स्थान पर पहुंची हैं एवं इस स्थान पर बनी हुई हैं। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में आज भी कई विकसित देश भारत से आगे हैं। इन समस्त देशों के बीच चूंकि भारत की आबादी सबसे अधिक अर्थात् 140 करोड़ नागरिकों से अधिक है, इसलिए भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद बहुत कम है। अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 30.51 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 89,110 अमेरिकी डॉलर हैं। इसी प्रकार, चीन के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 19.23 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 13,690 अमेरिकी डॉलर है और जर्मनी के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 4. 74 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 55,910 अमेरिकी डॉलर है। यह तीनों देश सकल घरेलू उत्पाद के आकार के मामले में आज भारत से आगे हैं। भारत के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 4.19 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है तथा प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद केवल 2,880 अमेरिकी डॉलर है। भारत के पीछे आने वाले देशों में हालांकि सकल घरेलू उत्पाद का आकार कम जरूर है परंतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में यह देश भारत से बहुत आगे हैं। जैसे जापान के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 4.18 लाख करोड़ है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 33,960 अमेरिकी डॉलर है। ब्रिटेन के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 3.84 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 54,950 अमेरिकी डॉलर है। फ्रान्स के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 3.21 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 46,390 अमेरिकी डॉलर है। इटली के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 2.42 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 41,090 अमेरिकी डॉलर है। कनाडा के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 2.23 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 53,560 अमेरिकी डॉलर है। ब्राजील के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 2. 13 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 9,960 अमेरिकी डॉलर है।

सकल घरेलू उत्पाद के आकार के मामले में विश्व की सबसे बड़ी 10 अर्थव्यवस्थाओं में भारत शामिल होकर चौथे स्थान पहुंच जरूर गया है परंतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में भारत इन सभी अर्थव्यवस्थाओं से अभी भी बहुत पीछे है। इस सबके पीछे सबसे बड़े कारणों में शामिल है भारत द्वारा वर्ष 1947 में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात, आर्थिक विकास की दौड़ में बहुत अधिक देर के बाद शामिल होना। भारत में आर्थिक सुधार कार्यक्रमों की शुरुआत वर्ष १९९१ में प्रारम्भ जरूर हुई परंतु इसमें इस क्षेत्र में तेजी से कार्य वर्ष 2014 के बाद ही प्रारम्भ हो सका है। इसके बाद, पिछले 11 वर्षों में परिणाम हमारे सामने हैं और भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था से छलांग लगते हुए आज चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। दूसरे, इन देशों की तुलना में भारत की जनसंख्या का बहुत अधिक होना, जिसके चलते सकल घरेलू उत्पाद का आकार तो लगातार बढ़ रहा है परंतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद अभी भी अत्यधिक दबाव में है। अमेरिका में तो आर्थिक क्षेत्र में सुधार कार्यक्रम 1940 में ही प्रारम्भ हो गए थे एवं चीन में वर्ष 1960 से प्रारम्भ हुए। अतः भारत इस मामले में विश्व के विकसित देशों से बहुत अधिक पिछड़ गया है। परंतु,

अब भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिकों की संख्या में तेजी से कमी हो रही है तथा साथ ही अतिधनाढय एवं मध्यमवर्गीय परिवारों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, जिससे अब उम्मीद की जानी चाहिए कि आगे आने वाली समय में भारत में भी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि होगी।

विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, अमेरिका में सेवा क्षेत्र इसकी सबसे बढ़ी ताकत है। अमेरिका में केवल 2 प्रतिशत आबादी ही कृषि क्षेत्र पर निर्भर है और अमेरिका की अधिकतम आबादी उच्च्य तकनीकी का उपयोग करती है जिसके कारण अमेरिका में उत्पादकता अपने उच्वत्तम स्तर पर है। पेट्रोलीयम पदार्थों एवं रक्षा उत्पादों के निर्यात के मामले में अमेरिका आज पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर है। वर्ष 2024 में अमेरिका ने 2.08 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर मूल्य के बराबर का सामान अन्य देशों को निर्यात किया है, जो चीन के बाद विश्व के दूसरे स्थान पर है। तकनीकी वर्चस्व, बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी नवाचार ने अमेरिका को विकास के मामले में बहुत आगे पहुंचा दिया है। टेक्निकल नवाचार से जुड़ी विश्व की पांच शीर्ष कम्पनियों में से चार, यथा एप्पल, एनवीडिया, माइक्रोसॉफ्ट एवं अल्फाबेट, अमेरिका की कम्पनियां हैं। इन कम्पनियों का संयुक्त बाजार मूल्य 12 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी अधिक है, जो विश्व के कई देशों के सकल घरेलू उत्पाद से बहुत अधिक है। अतः अमेरिका के नागरिकों ने बहुत तेजी से धन सम्पदा का संग्रहण किया है इसी के चलते प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद अमेरिका में बहुत अधिक है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वर्ष 1944 में अमेरिका के ब्रेटन वुड्ज नामक स्थान पर हुई एतिहासिक बैठक में विश्व के 44 देशों ने वैश्विक वित्तीय व्यवस्था के नए ढांचे पर सहमति जताते हुए अपने देश की मुद्रा को अमेरिकी डॉलर से जोड़ दिया था। इसके बाद से वैश्विक अर्थव्यवस्था में अमेरिकी डॉलर का दबदबा बना हुआ है। आज विश्व का लगभग 80 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग लेन देन अमेरिकी डॉलर में होता है।

अमेरिका के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन को पूरे विश्व का विनिर्माण केंद्र कहा जाता है क्योंकि आज पूरे विश्व के औद्योगिक उत्पादन का 31 प्रतिशत हिस्सा चीन में निर्मित होता है। चीन में पूरे विश्व की लगभग समस्त कम्पनियों ने अपनी विनिर्माण इकाइयां स्थापित की हुई हैं। चीन के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण इकाईयों का योगदान 27 प्रतिशत से अधिक हैं। पूरे विश्व में आज उत्पादों के निर्यात के मामले में प्रथम स्थान पर है। विभिन्न उत्पादों का निर्यात चीन की आर्थिक शक्ति का प्रमुख आधार है। सस्ती श्रम लागत के चलते चीन में उत्पादित वस्तुओं की कुल लागत तुलनात्मक रूप से बहुत कम होती है। वर्ष 2024 में चीन का कुल निर्यात 3.57 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक का रहा है।

भारत आज सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बना हुआ है। जापान, ब्रिटेन, फ्रांन्स, इटली आदि देशों से आगे निकलते हुए भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और शीघ्र ही लगभग एक वर्ष के बाद जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए भारत के विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के आसार भी अब स्पष्टतः दिखाई दे रहे हैं।

विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अर्थात् जर्मनी ने पिछले एक वर्ष में 25,000 पेटेंट अर्जित किए हैं। जर्मनी को, ऑटोमोबाइल उद्योग ने, पूरे विश्व में एक नई पहचान दी है। चार पहिया वाहनों के उत्पादन एवं निर्यात के मामले में जर्मनी पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर है। जर्मनी में निर्मित चार पहिया वाहनों का 70 प्रतिशत हिस्सा निर्यात होता है। यूरोपीय यूनियन के देशों की सड़कों पर दौड़ने वाली हर तीसरी कार जर्मनी में निर्मित होती है। जर्मनी विश्व का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश है, जिसने 2024 में 1.66 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर मूल्य के बराबर राशि के उत्पाद एवं सेवाओं का निर्यात किया था। मुख्य निर्यात वस्तुओं में मोटर वाहनों के अलावा मशीनरी, रसायन और इलेक्ट्रिक उत्पाद शामिल हैं।

आज भारत सकल घरेलू उत्पाद के आकार के मामले में विश्व में चौथे पर पहुंच गया है परंतु भारत को प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में जबरदस्त सुधार करने की आवश्यकता है। भारत पूरे विश्व में आध्यात्म के मामले में सबसे आगे है अतः भारत को धार्मिक पर्यटन को सबसे तेज गति से आगे बढ़ाते हुए युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर निर्मित करने चाहिए जिससे नागरिकों की आय में वृद्धि करना आसान हो। दूसरे, भारत में 80 करोड़ आबादी का युवा (35 वर्ष से कम आयु) होना भी विकास के इंजिन के रूप में कार्य कर सकता है। भारत की विशाल आबादी ने भारत को विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने में अपना योगदान दिया है। भारत की अर्थव्यवस्था में विविधता झलकती है और यह केवल कुछ क्षेत्रों पर निर्भर नहीं है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान 16 प्रतिशत है तथा रोजगार के अधिकतम अवसर भी कृषि क्षेत्र से ही निकलते हैं, जिसके चलते प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद विपरीत रूप से प्रभावित होता है। सेवा क्षेत्र का योगदान 60 प्रतिशत से अधिक है परंतु, विनिर्माण क्षेत्र का योगदान बढ़ाने की आवश्यकता है। वाणिज्य मंत्रालय द्वारा प्रदान की गई जानकारी के अनुसार वित्तीय वर्ष 2024–25 में भारत में 81 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ है अर्थात विदेशी निवेशक भारत में अपनी विनिर्माण इकाईयों की स्थापना करते हुए दिखाई दे रहे हैं। आज विदेशी निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था में विश्वास बढ़ा है। आज भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी 694 अरब अमेरिकी डॉलर के आंकड़े को पार कर गया है। आगे आने वाले समय में अब विश्वास किया जा सकता है कि भारत में भी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि होती हुई दिखाई देगी। ■

ईरान-इजराइल संघर्ष

डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह
सहायक प्रोफेसर देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विवि.

ईरान और इजराइल के बीच युद्ध के प्रमुख कारण ऐतिहासिक, धार्मिक, और भू-राजनीतिक मतभेदों में निहित हैं। दोनों ही देश लंबे समय से एक दूसरे के प्रति टकराव, संघर्ष और प्रतिद्वंद्वी की भाषा का प्रयोग करें। ये टकराव न सिर्फ क्षेत्रीय प्रभु और अपने दबदबे को लेकर है बल्कि इसके कूटनीतिक और राजनीतिक मायने भी हैं। इस संघर्ष का एक लंबा ऐतिहासिक पक्ष भी है।

ऐतिहासिक और वैचारिक टकराव : ईरान और इजराइल के बीच तनाव की शुरुआत 1979 की ईरानी क्रांति के बाद से मानी जा सकती है, जब ईरान में इस्लामिक गणतंत्र स्थापित हुआ। ईरान ने इजराइल को 'अवैध राष्ट्र' मानते हुए उसके अस्तित्व को कभी स्वीकार नहीं किया। दूसरी ओर, इजराइल, ईरान के परमाणु कार्यक्रम को अपने लिए खतरा मानता है।1982 के लेबनान युद्ध में ईरान ने लेबनानी शिया और फिलिस्तीनी आतंकवादी समूहों, जैसे हिजबुल्लाह और हमास, का समर्थन किया, जिससे दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ा।

ईरान ने हिजबुल्लाह (लेबनान), हमास (गाजा), और हूती विद्रोहियों (यमन) जैसे प्रहक्सी समूहों के माध्यम से इजराइल के खिलाफ अप्रत्यक्ष युद्ध छेड़ा है। 7 अक्टूबर 2023 को हमास के इजराइल पर हमले, जिसमें 1,200 लोग मारे गए, ने इस संघर्ष को और भड़काया। इजराइल ने सीरिया और लेबनान में ईरानी सैन्य ठिकानों और प्रहक्सी समूहों पर हमले किए, जिससे दोनों देशों के बीच सीधा सैन्य टकराव बढ़ा।

ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर विवाद : ईरान का परमाणु कार्यक्रम 1950 के दशक में शुरू हुआ, लेकिन 2000 के दशक में यह अंतरराष्ट्रीय विवाद का केंद्र बन गया। पश्चिमी देशों, विशेष रूप से अमेरिका और इजराइल, को आशंका है कि ईरान परमाणु हथियार विकसित कर रहा है, जबकि ईरान इसे शांतिपूर्ण (ऊर्जा और चिकित्सा) उद्देश्यों के लिए बताता है। 2002 में ईरान की गुप्त परमाणु सुविधाओं (नतांज और अराक) का खुलासा होने के बाद अमेरिका और उसके सहयोगियों ने ईरान पर प्रतिबंध लगाए। अमेरिका ने 2000 के दशक में अमेरिका ईरान को 'आतंकवाद का प्रायोजक' करार देते हुए संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से आर्थिक प्रतिबंध कड़े किए।

2015 का JCPOA (संयुक्त व्यापक कार्य योजना) के तहत ओबामा प्रशासन के साथ ईरान, अमेरिका, और अन्य विश्व शक्तियों (P5+1) ने एक समझौता किया, जिसमें ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रम को सीमित करने और IAEA (अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी) के निरीक्षण की अनुमति देने के बदले में प्रतिबंधों में राहत पाई। ट्रंप प्रशासन ने समझौते को 'खराब' बताते हुए इससे बाहर निकलने और ईरान पर 'अधिकतम दबाव' की नीति अपनाई। नए प्रतिबंध लगाए गए, जिससे ईरान की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई।2021 से अब तक बाइडन और फिर ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में JCPOA को पुनर्जनन की कोशिशें असफल रहीं।

इजराइल और पश्चिमी देशों को डर है कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम सैन्य उद्देश्यों के लिए हो सकता है, जिसे ईरान शांतिपूर्ण बताता है। इजराइल ने ईरान की परमाणु सुविधाओं (जैसे फोर्डो, नतांज, और इस्फहान) पर हमले किए, जिसे वह अपनी सुरक्षा के लिए जरूरी मानता है।

ईरान की प्रतिक्रिया : ईरान ने इन हमलों को 'युद्ध अपराध' करार दिया और जवाबी कार्रवाई में इजराइल पर सैकड़ों मिसाइलें और ड्रोन हमले किए, जैसे तेल अवीव और सोरोका अस्पताल पर हमला हुआ। अमेरिका ने इजराइल का समर्थन करते हुए ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमले किए, जिसे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 'सफल' बताया। ईरान ने इन हमलों को 'खतरनाक युद्ध' का हिस्सा माना और अमेरिका को जवाबी कार्रवाई की धमकी दी। ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला खामेनेई ने कहा कि वे किसी भी कीमत पर झुकेंगे नहीं और इजराइल व अमेरिका को 'मुंहतोड़ जवाब' देंगे।

13 जून 2025 से शुरू हुए इस युद्ध में इजराइल ने ईरान के सैन्य और परमाणु ठिकानों पर बड़े पैमाने पर हमले किए, जिसमें ईरान के सैन्य कमांडरों और परमाणु वैज्ञानिकों की हत्या शामिल है। जवाब में, ईरान ने तेल अवीव, येरूशलम, और बेर्सेबा जैसे इजराइली शहरों पर मिसाइल और ड्रोन हमले किए।

ईरान-इजराइल युद्ध का मूल कारण परमाणु हथियारों, क्षेत्रीय प्रभुत्व, और वैचारिक मतभेद हैं। यह संघर्ष न केवल दोनों देशों, बल्कि पूरे मध्य पूर्व और वैश्विक अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से तेल की कीमतों और भारत जैसे देशों के व्यापार पर प्रभाव डाल रहा है। भारत में पूरे मामले में अंतरराष्ट्रीय कानून और कूटनीतिक तरीके से विवाद को सुलझाने पर बोल दिया है। अगर हम देखें तो पिछले दशक में ईरान और इजराइल दोनों के साथ ही भारत का व्यापार घटा है। क्षेत्रीय अस्थिरता का प्रभाव पूरी पश्चिम एशिया की राजनीति पर पड़ेगा भारत की दृष्टिकोण से इंडिया मेडलिस्ट इकोनामिक कॉरिडोर (IMEA) का कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट भी इससे प्रभावित हो सकता है।

ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर विवाद अमेरिका और इजराइल के लिए सुरक्षा का मुद्दा है, जबकि ईरान इसे अपनी संप्रभुता से जोड़ता है। अमेरिका की 'अधिकतम दबाव' नीति और सैन्य कार्रवाइयों ने तनाव बढ़ाया, लेकिन हालिया युद्धविराम एक अस्थायी राहत हो सकता है। ■

ईरान-इजराइल युद्ध में भारत की निर्णायक भूमिका का समय

डॉ. अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

ईरान-इजराइल के बीच युद्ध में अमेरिका के कूदने से तनाव बढ़ गया है। अमेरिकी एयर स्ट्राइक के कुछ घंटों बाद ही ईरान ने संकेत दिया है कि वह होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद कर सकता है। इसके अलावा यमन के हूती विद्रोहियों ने भी अमेरिका के वॉरशिप को निशाना बनाने की घोषणा कर दी है। यह हमला ऐसे इलाके में हो सकता है जहां से दुनिया का सारा व्यापार गुजरता है।

विश्व का मध्य पूर्व क्षेत्र जंग के मुहाने पर खड़ा है। ईरान-इजराइल युद्ध और अमेरिकी हस्तक्षेप ने वैश्विक तनाव को काफी बढ़ा दिया है। अमेरिका के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप ने नई भू-राजनीतिक चुनौतियां उत्पन्न कर दी हैं। भारत, जो पारंपरिक रूप से रणनीतिक संतुलन और गैर-पक्षपात की नीति पर चलता रहा है, अब इस जटिल समीकरण में एक संवेदनशील स्थिति में खड़ा है। फिलहाल इसे तीसरे विश्व युद्ध की आहट तो नहीं कहा जा सकता लेकिन अगर पूरा मध्य पूर्व जंग की चपेट में आता है तो इसका विश्व की अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर पड़ेगा। युद्ध के असर से भारत भी अछूता नहीं रहेगा। भारत को इस टकराव का रणनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक असर झेलना पड़ सकता है। ऐसे में भारत इस घटनाक्रम में तटस्थ नहीं रह सकता। बदली हुई परिस्थितियों में वह अपनी कूटनीतिक और रणनीतिक रुख से निर्णायक भूमिका सकता है।

अगर युद्ध का दायरा बढ़ता है तो इसका सीधा असर तेल की कीमतों पर पड़ेगा, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना तय है। हालांकि अमेरिका के इस युद्ध में कूदने के बाद कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या चीन और रूस ईरान के समर्थन में कूद कर इस युद्ध को वैश्विक बना देंगे? सवाल यह भी है कि भारत का स्टैंड कैसा होना चाहिए? क्या यह युद्ध लंबा चल सकता है? और अगर यह बहुत लंबा खिंचता है तो इसका भारत सहित विभिन्न देश किस तरीके से प्रभावित होंगे, इन विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करने का प्रयास इस आलेख में किया गया है।

22 जनू को अमेरिका ईरान-इजरायल युद्ध में कूद गया। अमेरिका ने ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर बम बरसाकर हमला कर दिया। अमेरिका ने ईरान की जिन तीन परमाणु ठिकानों पर हमला किया है, उनमें

फोर्डो, नतांज, एस्फाहान शामिल हैं।

ईरान-इजराइल के बीच युद्ध में अमेरिका के कूदने से तनाव बढ़ गया है। अमेरिकी एयर स्ट्राइक के कुछ घंटों बाद ही ईरान ने संकेत दिया है कि वह होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद कर सकता है। इसके अलावा यमन के हूती विद्रोहियों ने भी अमेरिका के वॉरशिप को निशाना बनाने की घोषणा कर दी है। यह हमला ऐसे इलाके में हो सकता है जहां से दुनिया का सारा व्यापार गुजरता है।

यमन के हूती विद्रोहियों ने लाल सागर से अदन की खाड़ी और मध्य/उत्तरी अरब सागर के अंतरराष्ट्रीय शिपिंग लेन से गुजरने वाले व्यापारिक जहाजों को निशाना बनाना शुरू किया तो पूरा आवागमन बाधित हो जाएगा। इस रूट पर पहले तो सोमालिया के समुद्री लुटेरे ही व्यापारिक जहाजों के लिए समस्या होते थे, लेकिन अब यह नया जंग का खतरा है।

यह पूरा मार्ग सबसे बड़ा डकैती का इलाका है। जिबूती और सोमालिया से लुटेरे इसी जगह पर डकैती डालते हैं। इसका कारण है कि यह व्यापार का एकमात्र और सबसे छोटा रूट है। इसलिए यहां पर ट्रैफिक बाकी जगह से कहीं ज्यादा है। यूरोप की तरफ जाने वाला ऊर्जा व्यापार भी ओमान की खाड़ी से होता हुआ अदन की खाड़ी से होते हुए लाल सागर फिर स्वेज कैनाल के जरिए भूमध्य सागर तक पहुंचता है। अगर जंग के चलते कभी अदन की खाड़ी वाला रूट बाधित हुआ तो मर्चेंट वेसल को भूमध्य सागर तक पहुंचने के लिए या वहां से आने के लिए अफ्रीका के नीचे केप ऑफ गुड होप रूट से आना जाना करना होगा। यह मार्ग न सिर्फ समय को बढ़ाएगा, बल्कि कीमत भी बढ़ा देगा। जानकारी के मुताबिक, दुनिया के सबसे व्यस्त रूट में सुरक्षा का खतरा बढ़ रहा है, सुरक्षा को ध्यान में रखकर ग्लोबल शिपिंग ने तो इस पूरे मार्ग के इस्तेमाल ना करने की हिदायत दी है। कई व्यापारिक जहाज इस रूट को छोड़ लंबे रूट केप ऑफ गुड होप रूट का सहारा लेने को मजबूर हो गए हैं।

सामरिक मामलों के जानकारों का कहना है कि अगर होर्मुज जलडमरूमध्य में जहाजों का आना-जाना बंद हो गया तो भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर बुरा असर पड़ेगा। इससे तेल की आपूर्ति में कमी आएगी। महंगाई की आग भड़क सकती है। साथ ही, दुनिया भर में भी इसका असर देखने को मिलेगा। यह भारत की आर्थिक रफ्तार पर भी असर डाल सकता है।

दरअसल, होर्मुज जलडमरूमध्य फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण रास्ता है। दुनियाभर में जितना तेल और एलएनजी (तरलीकृत प्राकृतिक गैस) सप्लाई होता है, उसका लगभग 30 प्रतिशत इसी रास्ते से जाता है। अगर यह रास्ता बंद हो जाता है तो तेल की आपूर्ति कम हो जाएगी और कीमतें बढ़ जाएंगी।

ईरान-इजराइल युद्ध और उसमें अमेरिकी हस्तक्षेप एक ऐसी चुनौती है जिससे भारत को अपनी संतुलनकारी विदेश नीति, ऊर्जा रणनीति और वैश्विक भूमिका पर पुनर्विचार करना होगा। आज समय की आवश्यकता है कि भारत शांति स्थापना के पक्ष में सक्रिय भूमिका निभाए, कूटनीतिक संवाद को बढ़ावा दे और अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक मंचों पर एक जिम्मेदार और नई शक्ति के रूप में उभरे।

थिंक टैंक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (GTRI) के अनुसार मध्य पूर्व में बढ़ता तनाव इराक, जॉर्डन, सीरिया, लेबनान और यमन समेत पश्चिम एशिया के साथ भारत के व्यापार पर बुरा असर डाल सकता है। इन देशों से भारत 33.1 बिलियन डॉलर (2.75 लाख करोड़) का आयात और 8.6 बिलियन डॉलर (74.5 हजार करोड़) का निर्यात करता है।

भारत की ऊर्जा सुरक्षा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. लक्ष्मण कुमार बेहरा भी कहते हैं कि इस रास्ते के बंद होने से दुनिया भर के ऊर्जा बाजारों पर असर पड़ेगा। भारत की ऊर्जा सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाएगी। भारतीय नौसेना के पूर्व प्रवक्ता कैप्टन डी के शर्मा (रिटायर्ड) ने कहा कि ईरान की धमकी से तेल के व्यापार में दिक्कत आ सकती है। जहाजों के आने-जाने में रुकावट होने से बीमा का प्रीमियम भी बढ़ सकता है। इलाके में तनाव बढ़ने से तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं। कुछ जानकारों का मानना है कि अगर ईरान ने कोई कार्रवाई की तो कीमतें 80—90 डॉलर प्रति बैरल या उससे भी ज्यादा 100 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकती हैं।

भारत की विदेश नीति हमेशा गुटनिरपेक्षता और बहुपक्षीय संवाद को प्राथमिकता देती रही है। भारत ने ईरान के साथ ऐतिहासिक, ऊर्जा आधारित, और सांस्कृतिक रिश्ते बनाए रखे हैं, वहीं इजराइल के साथ सैन्य, तकनीकी और खुफिया सहयोग पिछले दो दशकों में गहरा हुआ है। अमेरिका के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी अब 'क्वाड' और 'इंडो-पैसिफिक' जैसी अवधारणाओं तक पहुंच गई है।

ईरान-इजराइल युद्ध और उसमें अमेरिकी हस्तक्षेप एक ऐसी चुनौती है जिससे भारत को अपनी संतुलनकारी विदेश नीति, ऊर्जा रणनीति और वैश्विक भूमिका पर पुनर्विचार करना होगा। आज समय की आवश्यकता है कि भारत शांति स्थापना के पक्ष में सक्रिय भूमिका निभाए, कूटनीतिक संवाद को बढ़ावा दे और अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक मंचों पर एक जिम्मेदार और नई शक्ति के रूप में उभरे। ■

जनगणना में स्व-गणना की सुविधा

डिजिटल होगी जातिवार जनगणना

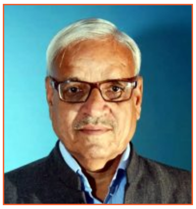

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार

दुनिया की सबसे बड़ी आबादी की जनगणना की अधिसूचना जारी हो गई है। कोविड महामारी के कारण 2021 में होने वाली यह जनगणना अब शुरू होगी। कांग्रेस समेत पूरा विपक्ष जातिवार जनगणना कराने की मांग कर रहा था। अचानक मोदी सरकार ने जातिवार जनगणना कराने का फैसला लेकर पूरे विपक्ष को चौंका दिया। क्योंकि अब यह मुद्दा हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा। साथ ही सभी वर्गों की प्रमुख जातियों के साथ उपजातियों की जनगणना के आंकड़े जब सामने आएंगे, तब यह स्पष्ट हो जाएगा कि सैद्धांतिक रूप से जातिगत गणना कराना उचित था या नहीं ? ई-बाजार, ई-आवेदन, ई-रेल व बस में आरक्षण ई-भुगतान के बाद अब ई-जनगणना यानी डिजिटल गिनती होगी। इस गिनती में जाति की गिनती भी साथ-साथ होगी। इसमें जन्म और मृत्यु दोनों ही डिजिटल जनगणना से जुड़े होंगे। हर जन्म के बाद डिजिटल जनगणना खुद ही अद्यतन हो जाएगी और जब किसी की मृत्यु होगी तो उसका नाम खुद ही डाटा से डिलीट हो जाएगा। सेंसर रजिस्टर यानी जनगणना में बच्चे के जन्म माता-पिता, जाति और जन्म स्थान की जानकारी समेत 16 भाषाओं में 36 प्रश्नों के उत्तर दर्ज हो जाएंगे। बालक जब 18 साल का होगा तो खुद ही उसका नाम चुनाव आयोग के पास चला जाएगा, नतीजतन उसका मतदाता पहचान पत्र बनने के साथ मतदाता सूची में भी नाम स्वमेव दर्ज हो जाएगा। फिर जब किसी की मौत हो जाएगी तो ऑनलाइन जनगणना के डाटा से उस शख्स का नाम खुद ही डिलीट भी हो जाएगा। इस तरह से जनगणना का डाटा हमेशा खुद अद्यतन होता रहेगा। राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्ट्रर (एनपीआर) की प्रक्रिया पर करीब 12000 करोड़ रुपए खर्च होंगे। डिजिटल जनगणना की घोषणा 1 फरवरी 2021 को वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने की थी।

जनगणना-2021 में नागरिकों को गणना में शामिल होने की एक बेहतर और अनूठी ऑनलाइन सुविधा दी गई है। भारत सरकार के केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भारतीय नागरिकों को ऑनलाइन स्व-गणना का अधिकार देने के लिए नियमों में परिवर्तन किए हैं। जनगणना (संषोधन)-2022 के अनुसार परंपरागत तरीके से तो जनगणना घर-घर जाकर सरकारी कर्मचारी करेंगे ही, लेकिन अब नागरिक स्व-गणना के माध्यम से भी अनुसूची प्रारूप भर सकता है। इसके लिए पूर्व नियमों में 'इलेक्ट्रॉनिक फार्म' शब्द जोड़ा गया है, जो सूचना प्रौद्योगिकी कानून 2000 की धारा दो की उप धारा (एक) के खंड आर में दिया गया है। इसके अंतर्गत मीडिया, मैग्नेटिक, कंप्यूटर जनित माइक्रोचिप या इसी तरह के अन्य उपकरण में तैयार कर भेजी या संग्रहित की गई जानकारी को इलेक्ट्रॉनिक फार्म में दी गई जानकारी माना जाएगा। यानी एनरायड मोबाइल से भी अपनी गिनती दर्ज की जा सकेगी, जो कि आजकल घर-घर में उपलब्ध है। इस ऑनलाइन प्रविष्टि के अलावा घर-घर जाकर भी जनगणना की जाएगी।

इसमें कोई दो राय नहीं कि ऑनलाइन प्रयोग अद्वितीय है। लेकिन देश की जनता के स्थायी और निरंतर गतिशील पंजीकरण के दृष्टिगत अब जरूरी है कि ग्राम पंचायत स्तर पर जनगणना की जवाबदेही सौंप दी जाए। गिनती के विकेंद्रीकरण का यह नवाचार जहां 10 साला जनगणना की बोझिल परंपरा से मुक्त होगा, वहीं देश के पास प्रतिमाह प्रत्येक पंचायत स्तर से जीवन और मृत्यु की गणना के सटीक व विश्वसनीय आंकड़े मिलते रहेंगे। इस लेख में प्रस्तुत की जाने वाली जनगणना की यह तरकीब अपनाना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि तेज भागती यांत्रिक व कंप्यूटरीकृत जिदंगी में सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक बदलाव के लिए सर्वमान्य जनसंख्या के आकार व संरचना का दस साल तक इंतजार नहीं किया जा सकता ? वैसे भी भारतीय समाज में जिस तेजी से लैगिंक, रोजगारमूलक और जीवन स्तर मे परिवर्तन आ रहे हैं, उसकी बराबरी के प्रयासों के लिए भी जरूरी है कि हम जनगणना की परंपरा में आमूलचूल परिवर्तन लाएं ?

जनसंख्या के आकार, लिंग और उसकी आयु के अनुसार उसकी जटिल संरचना का कुछ ज्ञान न हो तो आमतौर पर अर्थव्यवस्था के विकास की कालांतर में प्रगति, आमदनी में वृद्धि, खाद्य पदार्थों व पेयजल की उपलब्धता, आवास, परिवहन, संचार, रोजगार के

संसाधन, शिक्षा, स्वास्थ्य व सुरक्षा के पर्याप्त उपायों के इजाफे के पूर्वानुमान लगाना मुश्किल है। जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात में ही लोकसभा और विधानसभा सीटों को परिसीमन के जरिए बढ़ाया जाता है। 2028 में होने वाले लोकसभा चुनाव में महिलाओं के लिए भी 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित रहेंगी। जनगणना में निरंतरता इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि देश व दुनिया में जनसंख्या वृद्धि विस्फोटक बताई जा रही है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक दुनिया की जनसंख्या लगभग सात सौ करोड़ हो चुकी है। 2050 में यह आंकड़ा 10 करोड़ तक पहुंच सकता है। इस आबादी का पचास प्रतिशत से भी ज्यादा हिस्सा महज नौ देशों चीन, भारत, अमेरिका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नाइजीरिया, कांगो, इथोपिया और तंजानिया में होगा। परिवार नियोजन के तमाम उपायों के बावजूद दुनिया में प्रति महिला सकल प्रजनन दर 2.5 शिशु है, 2050 में यह दर घटकर 2.1 प्रति महिला प्रति शिशु रह जाने की उम्मीद है।

भारत की जनसंख्या 1901 में 23,83,96,327 थी। आजादी के साल 1947 में यह आबादी 34.2 करोड़ हो गई थी। 1947 से 1981 के बीच भारतीय आबादी की दर में ढाई गुना वृद्धि दर्ज की गई और आबादी 68.4 करोड़ हो गई थी। जनसंख्या वृद्धि दर का आकलन करने वाले विशेषज्ञो का मानना है कि भारत में प्रति वर्ष एक करोड़ 60 लाख आबादी बढ़ जाती हैं। इस दर के अनुसार हमें अपने देश की करीब एक अरब 40 करोड़ लोगों की एक निश्चित जनसंख्या प्रारूप में गिनती करनी है, ताकि व्यक्तियों और संसाधनों के समतुल्य आर्थिक व रोजगारमूलक विकास का खाका खींचा जा सके। जनसंख्या का यह आंकड़ा अज्ञात भविष्य के विकास की कसौटी पर खरा उतरे उसका मूलाधार वैज्ञानिक तरीके से की गई सटीक जनगणना ही है।

हरेक दस साल में की जाने वाली जनता-जनार्दन की गिनती में करीब 34 लाख कर्मचारी जुटते हैं। डिजिटल डिवाइस से लैस 1.3 लाख जनगणना अधिकारी भी रहेंगे। छह लाख ग्रामों, पांच हजार कस्बों, सैकड़ों नगरों और दर्जनों महानगरों के रहवासियों के द्वार-द्वार दस्तक देकर जनगणना का कार्य करना कर्मचारियों के लिए जटिल होता है। यह काम तब और बोझिल हो जाता है जब किसी कर्मचारी-दल को उसके स्थनीय दैनंदिन कार्य से दूर कर उसे दूरांचल गांव में भेज दिया जाता हैं। ऐसे हालात में गिनती की जल्दबाजी में वे मानव समूह छूट जाते हैं, जो आजीविका के लिए मूल निवास स्थल से पलायन कर जाते हैं। ऐसे लोगों में ज्यादातर अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजातियों के लोग होते हैं। बीते कुछ सालों में आधुनिक व आर्थिक विकास की अवधारणा के चलते इन्हीं जाति समूह के करीब चार करोड़ लोग विस्थापन के दायरे में हैं। इनसे रोशन गांव तो अब बेचिराग हैं, लेकिन इन विस्थापितों का जनगणना के समय स्थायी ठिकाना कहां है, जनगणना करने आए दल को यह पता लगाना मुशकिल होता है ?

जनगणना की विधि का हो विकेंद्रीकरण

जनगणना की प्रक्रिया के वर्तमान स्वरूप को बदलकर एक ऐसे स्वरूप में तब्दील किया जाए, जिससे इसकी गिनती में निरंतरता बनी रहे। इसके लिए न भारी भरकम संस्थागत ढांचे की जरूरत है और न ही सरकारी अमले की। केवल गिनती की केन्द्रीयकृत जटिल पद्धति को विकेन्द्रीकृत करके सरल करना है। गिनती की यह तरकीब ऊपर से शुरू न होकर नीचे से शुरू होगी। देश की सबसे छोटी राजनीतिक व प्रशासनिक इकाई ग्राम पंचायत है। जिसका त्रिस्तरीय ढांचा विकास खण्ड व जिला स्तर तक है। हमें करना सिर्फ इतना है कि तीन प्रतियों में एक जनसंख्या पंजी पंचायत कार्यालय में रखनी है। इसी पंजी की प्रतिलिपि कंप्यूटर में फीड जनसंख्या प्रारूप पर भी दर्ज हो। जिन ग्राम पंचायतों में इसे जनसंख्या संबंधी वेबसाइट से जोड़कर इन आंकड़ो का पंजीयन सीधे अखिल भारतीय स्तर पर हो सकता है। जैसा कि अब ऑनलाइन माध्यमों से अपनी गिनती दर्ज करा सकेंगे।

परिवार को इकाई मानकर सरपंच, सचिव और पटवारी को यह जवाबदेही सौंपी जाए कि वे परिवार के प्रत्येक सदस्य का नामकरण व अन्य जानकारियां जनसंख्या प्रारूप के अनुसार इन पंजियों में दर्ज करें। इस गिनती को सचित्र भी किया जा सकता है। चूंकि ग्राम पंचायत स्तर का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को बखूबी जानते हैं इसलिए इस गिनती में चित्र व नाम के स्तर पर भ्रम की स्थिति निर्मित नहीं होगी। जैसा कि मतदाता सूचियों और मतदाता परिचय-पत्र में हो जाती हैं। गिनती की इस प्रक्रिया से कोई वंचित भी नहीं रहेगा। क्योंकि जनगणना किए जाने वाले जन और जनगणना करने वाले लोग स्थानीय हैं। गांव में किसी भी शिशु के पैदा होने की जानकारी और किसी भी व्यक्ति की मृत्यु की जानकारी तुरंत पूरे गांव में फैल जाती है, अतः इस जानकारी को अविलंब पंजी में दर्ज किया जा सकेगा।

ग्राम पंचायत पर एकत्रित होने वाली यह जानकारी प्रत्येक माह की एक निश्चित तारीख को विकासखण्ड स्तर पर पहुंचाई जाकर पंजी की एक प्रति विकासखण्ड कार्यालय में रखी जाए और इसे आधार बनाकर इसका तत्काल कंप्यूटरीकरण किया जाए। जिले के सभी विकास खंडों की यह जानकारी जिला स्तर पर बुलाई जाए और यहां इसका एकीकरण किया जाकर इस गिनती को कंप्यूटर में फीड किया जाए। इस तरह से सभी विकासखण्डो के आंकड़ों की गणना कर जिले की जनगणना प्रत्येक माह होती रहेगी। जिलाबार गणना के डाटा को प्रदेश स्तर पर सांख्यकीय कार्यालय में इकट्ठा कर प्रदेश की जनगणना का आंकड़ा भी प्रत्येक माह सामने आता रहेगा। प्रदेशवार जनसंख्या के आंकडो को देश की राजधानी में जनसंख्या कार्यालय में संग्रहीत कर प्रत्येक माह देश की जनगणना का वैज्ञानिक व प्रामाणिक आंकड़ा मिलता रहेगा। देश के नगर व महानगर वार्डो में विभक्त हैं। अतः वार्डवार जनगणना के लिए गिनती की उपरोक्त प्रणाली ही अपनाई जाए। इस गिनती में जितनी पारदर्शिता और शुद्धता रहेगी उतनी किसी अन्य पद्धति से संभव नहीं है। ■

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

भारत की राष्ट्रनीति

भारत की राष्ट्रनीति के सन्दर्भ में वैदिक काल से लेकर आज तक तीन सिद्धान्तों की चर्चाएं सर्व प्रधान बनी हुई हैं। पहली बात यह कि राष्ट्र जीवन के प्रत्येक अंग की तरह राजनीति भी नैतिकता के नियमों का दृढ़ता से परिपालन अपने कार्य व्यवहार और व्यवस्थाओं में परिलक्षित करती रहे।

भारत की चेतना को ऐसे प्रतिनिधि या नायक अखरते हैं जिनके जीवन में राष्ट्र प्रथम का विचार नहीं होता। ऐसे लोग राष्ट्र के लिए सदा घातक सिद्ध होते हैं। यही धारणा भारत की मेधा ने बार बात खुलकर व्यक्त की है। दूसरी बात यह कि अल्पज्ञ व्यक्ति प्रभुत्व पाते ही अपनी मूर्खता, अहंकार और लोलुपता प्रकट कर देते हैं। ऐसे व्यक्तियों का चयन होने पर वह राजनीति में अग्रिम पंक्ति में खड़े होने का अधिकार पा जाते है। फिर तो वह पूरे परिवेश को गंदला करके राष्ट्र को हानि पहुंचाते हैं। राष्ट्र के निर्णायक दायित्वों को पाकर जिनमें स्वार्थ की भावना घर कर जाती है ऐसे लोग राष्ट्र की अस्मिता को कभी भी तार तार करने में संकोच नहीं करते। भारतीय सामाजिक चिन्तन दीर्घकाल से उच्च नैतिक आदर्शों से प्रभावित है। अनेक प्रकार के विकारों, दोषों के दुष्प्रभाव साफ दिखायी पड़ते हैं। तथापि राष्ट्र जीवन की पवित्रता की अपेक्षाएं सदा उच्च स्तर पर टिकी हुई हैं। तभी तो यह जन धारणा बहुत प्रबल है कि श्रेष्ठ राष्ट्र नायक एक न एक दिन भारत के मर्म को पहचानते हुए प्रकट अवश्य होता है। तब वह राष्ट्र जीवन के सारे दोषों विकारों को दूर करने के साथ राष्ट्र द्रोहियों के अन्त का बिगुल बजाता है। तब देश के राष्ट्रभक्त अनुगामी बनमें में गर्व करते हैं।

सनातन संस्कृति और धर्म : भारत का यह अमूर्त सत्य है कि समाज नीति से राष्ट्रनीति तक के सभी नियामक निर्णयों को दो मुख्य आधार प्रभावित करते आये हैं। पहला आधार है लोक धर्म। दूसरा आधार है सनातन संस्कृति और धर्म द्वारा नियत की गयी नीतियां। जिनकी सम सामयिक व्याख्या हर काल में समाज के मूर्धन्य मनीषी करते आये हैं।

भारत की पावन धरती का एक नैसर्गिक स्वभाव है। इसके अनुसार यह भारत देश पृथ्वी का मात्र एक खण्ड नहीं है। यह परम पूज्य भारत माता है। हम सबकी यह माता पापियों और स्वार्थवश इन्हें पालने वाले परिपालकों का सर्वनाश करने का आदेश देती है। देश भक्त समाज राष्ट्रद्रोहियों के प्रति सदा सचेत रहता है। मेवाड़ की एक सच्ची कहानी बड़ी प्रेरक है।

पन्ना धाय का मार्मिक प्रसंग : चित्तौड़ दुर्ग की महारानी कर्णावती ने 08 मार्च 1535 को जौहर किया था। वह महाराणा सांगा की महारानी थीं। राणा सांगा की रानी ने जौहर की अग्नि में अपनी आत्माहुति देने से पहले अपने अबोध पुत्र उदय सिंह द्वितीय को उन्होंने पन्ना नाम की गुर्जर परिवार की सेविका को सौंप दिया था। बालक उदय सिंह द्वितीय राणा सांगा के एक मात्र उत्तराधिकारी थे। मेवाड़ राज घराने पर आयी आपदा के समय एक और संकट खड़ा हो गया जब उदय सिंह द्वितीय को मार डालने के लिए एक दुष्ट बलवीर राजमहल में तलवार लेकर घुस आया। मेवाड़ राज पर निष्कंटक अधिकार करने के लिए वह नन्हें राजकुमार उदय सिंह की बलि चढ़ाने को उतावला था। तब पन्ना धाय ने अदम्य साहस दिखाया था। पन्ना एक अबोध बच्चे चन्दन की माता थीं। बलवीर ने मेवाड़ राज की सत्ता को छल से हथिया लिया था। बलवीर की दुष्टता से कुंवर उदय सिंह को बचाने के लिए पन्ना धाय ने अपने बेटे चन्दन की बलि दिला कर अपूर्व त्याग का परिचय दिया था। पन्ना ने अपने बेटे चन्दन को चित्तौड़ के राजपुत्र की शैय्या पर सुला कर बलवीर को इंगित से संकेत कर दिया कि कुंवर जी सो रहे हैं।

इस तरह उदय सिंह की रक्षा हो सकी। बाद में इन्हीं उदय सिंह द्वितीय के पुत्र हुए राणा प्रताप। पुत्र के बलिदान के उपरान्त पन्ना धाय ने उदय सिंह को किसी तरह कुंभलगढ़ किले में सुरक्षित भेज पहुंचवाया। माता पन्ना की आंखों के सामने उसकी कोख से जन्मे चन्दन का सिर बलवीर ने धड़ से अलग कर दिया था। पर माता पन्ना की आंखों से आंसुओं की एक बूंद भी नहीं गिरी थी। पन्ना के लिए उस क्षण पुत्र चन्दन से अधिक महत्व चित्तौड़ की अस्मिता का था। पन्ना ने उस समय राष्ट्र प्रथम का मंत्र याद रखा। स्वाभिमानी राष्ट्रभक्त भारतीय माता पन्ना धाय को सदा नमन करते हैं।

शिवाजी और चन्द्रगुप्त मौर्य : माता जीजाबाई ने अपने पुत्र शिवा को समर्थ गुरु रामदास के साथ मिलकर ऐसा गढ़ा कि शिवाजी भारत माता के भाल का गौरव बन

गये। औरंगजेब की कर्कश नीतियों के विरुद्ध छत्रपति शिवाजी लौह दीवार बनकर खड़े रहे। भारत में वीर सपूतों की लम्बी श्रृंखला है। राष्ट्र प्रथम के मौलिक सिद्धान्त को इन सभी ने कभी ओझल नहीं होने दिया। तभी तो भारत के गौरव के लिए राष्ट्र की बेदी पर बलिदानियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर करने की बारी आने पर संकोच नहीं किया।

एक सुदृढ़ राष्ट्र कैसे बनता है। इस सन्दर्भ में स्पष्ट व्याख्या भारतीय ज्ञान परम्परा के ग्रन्थों में महान विद्वानों ने प्रस्तुत की है। इनके व्यवहारिक प्रयोग भी मिलते हैं। आचार्य चाणक्य ने अत्याचारी मगध के राजा नन्द के शासन का अन्त करने के लिए पूरी संरचना गढ़ी थी। उसका सफल प्रयोग करके प्रस्तुत किया। चाणक्य तो तक्षशिला विश्वविद्यालय के प्रमुख आचार्य थे। उन्हें यह प्रत्यक्ष अनुभूति हुई कि भारत राष्ट्र गहन संकटों में घिर चुका है। राज्यों के शासक उन्मुक्त अहंकारी , लोलुप और मूर्ख हैं।

आचार्य चाणक्य का प्रयोग : भारत को बचाने का संकल्प चाणक्य ने लिया। उन्होंने सर्व प्रथम सुयोग्य नायक गढ़ा। राजा की समस्त योग्यताओं से युक्त कर्तव्यनिष्ठ नायक चन्द्रगुप्त उस समय के अक्षम राजाओं के समक्ष एक अनबुझी पहेली बनकर उभरे। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को इतना प्रखर, प्रचण्ड और प्रवीण बनाया कि नन्दवंश ही नहीं सिकन्दर के बाद भारत की सीमाओं के निकट विशाल साम्राज्य खड़ा कर लेने वाला सेल्यूकश भी मात खा गया। सेल्यूकश जब तीन लाख सैनिकों की अजेय सेना लेकर आक्रमण करने आया तो चाणक्य और उनके शिष्य सम्राट चन्द्रगुप्त ने उसे घुटनों पर ला दिया।

सेल्यूकश ने आचार्य चाणक्य के सामने गिड़गिड़ाते हुए प्राणों की याचना की। कूटनीति के धुरंधर चाणक्य ने अपनी शर्तों पर उससे संधि की बात मनवा कर ही क्षमा किया। चाणक्य ने उससे कहा- सेल्यूलाश सर्व प्रथम तुम अपना जीता हुआ पूरा साम्राज्य महाराजा चन्द्र गुप्त को सौंप दो। सेल्यूकश को लिखित

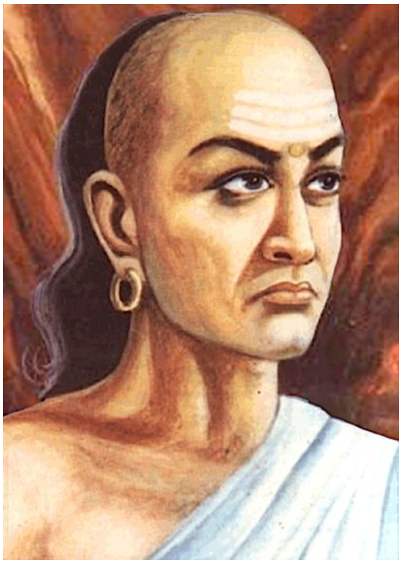

भारत को बचाने का संकल्प चाणक्य ने लिया। उन्होंने सर्व प्रथम सुयोग्य नायक गढ़ा। राजा की समस्त योग्यताओं से युक्त कर्तव्यनिष्ठ नायक चन्द्रगुप्त उस समय के अक्षम राजाओं के समक्ष एक अनबुझी पहेली बनकर उभरे। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को इतना प्रखर, प्रचण्ड और प्रवीण बनाया कि नन्दवंश ही नहीं सिकन्दर के बाद भारत की सीमाओं के निकट विशाल साम्राज्य खड़ा कर लेने वाला सेल्यूकश भी मात खा गया।

रूप में कांधार, गांधार सहित पूरा अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, बाल्टिस्तान से लेकर तुर्कमेनिस्तान, वर्तमान ईरान और इराक के साथ चीन के जितने हिस्से को उसने अपने अधिकार में कर लिया था वह भी चन्द्रगुप्त को सौंपना पड़ा।

भारत के ज्ञात इतिहास की दृष्टि से यह सबसे बड़ा समर्पण था। चाणक्य ने सेल्यूकश के बार बार याचना करने पर भी भारत के निकट बसे रहने के लिए उसे भूमि का एक टुकड़ा भी देना स्वीकार नहीं किया। उसकी बची हुई सेना को पूरी तरह निशस्त्र करके रोम लौट जाने भर की छूट दी। पर लौटने की अनुमति देने से पहले सेल्यूकश से कहा तुमको अपनी बेटी हेलेना का विवाह सम्राट चन्द्रगुप्त से करना होगा। भारत से विदा होने से पहले यह विवाह आवश्यक है।

चन्द्रगुप्त भी इस प्रस्ताव से बहुत चकित हुए थे। उन्होंने गुरुदेव को प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। पर चाणक्य ने तो टेक पकड़ ली थी। दोनों के बीच विवाह की यह एक गांठ बहुत रहस्यमयी थी। चाणक्य की कूटनीति गजब की थी। सेल्यूकश से उन्होंने कहा था कि तुम्हारी बेटी से जन्मने वाली सन्तान ही नहीं उसके बाद भी इनकी कोई संतति भी भारत में किसी सामाजिक, राजनीतिक दायित्व के योग्य कभी मान्य नहीं होगी। धन्य थे चाणक्य। उनकी यह नीति भारत के संविधान का अंग नहीं बनने पायी। यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

राष्ट्र का नायक कैसा हो : चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की एक उक्ति बड़े महत्व की है। वह कहते थे, Politician thinks about next election while Statsman Thinks about next generation - इस कथन का भाव यह है कि एक राजनीतिक व्यक्ति या कहें नेता केवल अगले चुनाव की बात सोचता है। जबकि एक राष्ट्रनेता भावी पीढ़ियों के भविष्य की बातों का चिन्तन करते हुए नीतियां गढ़ता है। राष्ट्र नायक के चिन्तन मंथन का व्याप राष्ट्र के हित को लेकर होता है। वह सदा निजी स्वार्थ और लोभ से दूर होता है।

अमेरिकी चिन्तक हैंटिंगटन का कथन - अमेरिकी चिन्तन धारा को पटरी पर लाने का प्रयास करने वाले महान चिन्तक सैमुअल फिलिप हंटिंगटन 1927 से 2008 ने अपनी पुस्तक Who are we में कहा है कि कोई राष्ट्र तब तक अपने को सुरक्षित समुन्नत और दीर्घ काल तक अडिग रहने वाला नहीं मान सकता जब तक उसके समाज में

स्वाभिमान से जुड़ी राष्ट्रीयता प्रगाढ़ न हो। हंटिंगटन ने मूल अमेरिकियों को अपनी पुस्तक में सचेत किया है कि संसार के कई देश राष्ट्रीयता के मार्ग से भटक चुके हैं। वह न तो अपनी संस्कृति को बचा पा रहे हैं और न ही राष्ट्र की सीमाओं को बचा पाने में सक्षम हो रहे हैं। इसका कारण एक ही है कि उनके नेतृत्व और समाज शास्त्रियों दोनों की सोच में राष्ट्रीयता के मानकों का लोप होता गया। ऐसे देश अपनी अस्मिता को खोते चले गये। स्वत्त्व अर्थात अपनी वास्तविक पहचान को भुला दिया। अपनी संस्कृति को त्यागते जा रहे ऐसे राष्ट्रों में फिलिप हंटिंगटन ने अमेरिका की भी गिनती कर डाली।

हैंटिंगटन ने दुख व्यक्त किया कि अमेरिकी जीवन मूल्य भुलावा बनकर रह गये हैं। क्योंकि अनेक नायकों ने उन मर्यादाओं की अनदेखी करनी जारी रखी जो अमेरिकी जीवन आदर्शों की रक्षा के लिए नितान्त अनिवार्य थे। सैमुअल फिलिप ने कहा कि अमेरिका प्रौद्योगिकी के उपयोग से उद्यम और आर्थिक उन्नति की ओर तो बढ़ गया । पर उसने अपने स्वत्त्व के महात्म्य को भुला दिया। इससे अमेरिका एक बाजार बना जिसमें सुख खोजने दुनिया के लोग चले तो आये पर आखिर हम हैं कौन यह बात स्वयं अमेरिकी लोग भूल गये। उन्होंने इस दशा को दुखद कहा। हंटिंगटन के नहीं रहने पर अमेरिकी उनकी बातों की चर्चा तो करते हैं पर सुधार की राह उनको नहीं दिखती।

अर्जुन का स्वत्त्व जगाया: श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन से प्रथम अध्याय में 23 बार उनका नाम लेकर युद्ध करने, कर्तव्य मार्ग से नहीं भटकने के लिए सचेत किया। अर्जुन का विषाद तब भी दूर नहीं हुआ तो अगले अध्याय में उनको फटकारते हुए विराट रूप दिखाया। उनके स्व को जगाया। श्रीकृष्ण ने कहा कि धर्म का यही आदेश है। धर्म और राष्ट्र के मार्ग की समस्त बाधाओं को दूर करो। भले ही जिन्हें अपना कहते हो उनका भी वध करना पड़े। गीता में श्रीकृष्ण ने यह तक स्पष्ट कर दिया कि धर्म की हानि होने पर परमात्मा

को भी प्रकट होना पड़ता है। तब अर्जुन युद्ध के लिए गाण्डीव लेकर सन्नद्ध हुए।

चाणक्य की कसौटी : आचार्य चाणक्य का एक प्रसिद्ध श्लोक है जिसका भाव है कि जैसे कनक अर्थात सोने को चार प्रकार से परखा जाता है। घिस करके, काट करके, गर्म करके और पीट करके। उसी तरह मनुष्य को परखने की चार रीतियां होती हैं। उसके त्याग और शील को सर्व प्रथम जांचना चाहिए। फिर यह देखना चाहिए कि उसमें किन गुणों की प्रबलता है। अन्ततः वह कर्तव्य निर्वहन की दृष्टि से कितना प्रवीण और प्रमाणिक है। निश्चित रूप से आचार्य चाणक्य ने यह ऐसी रीति बतायी है जो अनुपम है।

चाणक्य का मानना था कि किसी व्यक्ति का किसी दायित्व के लिए चयन करने की कसौटी तय करनी चाहिए। व्यक्ति का आकलन उसके पुस्तकीय ज्ञान से करना दोष पूर्ण पद्धति है। किसी के गुण उसके त्याग शील समर्पण जैसे भावों के बिना परखे नहीं जा सकते।

गुण अवगुण परखने के साथ यह देखना चाहिए कि वह देश के काम का है कि नहीं। उसकी निष्ठा राष्ट्र के प्रति हैं कि नहीं। परखने की चाणक्य की बतायी पद्धति बहुत सशक्त उपमा पर आधारित है। ऐसी नीतियां यदि अपनायी जा सकें तो राष्ट्र कल्याण के लिए बनायी जाने वाली योजनाओं की परिणिति शत प्रतिशत होने में सन्देह मिट जाएंगे। भारत के नियामक इस ओर दृष्टि डालेंगे तो देश के लिए यह संदेश बहुत उपयोगी रहेंगे।

राष्ट्र की गरिमा की रक्षा के साथ शासन तंत्र को भ्रष्टाचार मुक्त रखने की अनिवार्यता भी चाणक्य ने अपने ग्रन्थों में बतायी है। योजनाओं को गढ़ते समय राष्ट्र प्रथम की धारणा ओझल न होने पाये। यह चिन्तन ही प्रधान है। योजनाओं के क्रियान्वयन के समय निगरानी और निरीक्षण को प्राथमिकता देने की बात भी सदा कही जाती रही है।

भारत में चाणक्य के अतिरिक्त जितने और भी चिन्तक हुए हैं सभी ने राष्ट्र की संस्कृति और धर्म को अक्षुण्ण रखने की अनिवार्यता बतायी है। भारत के सभी महान विचारकों की मान्यता यही रही है कि सनातन संस्कृति मानव मात्र के साथ ही सृष्टि के लिए एक आचार संहिता है। धरा पर धर्म की संज्ञा इसके अतिरिक्त किसी और को नहीं दी जा सकती। इसीलिए ऐसे मनीषियों ने राष्ट्र के लिए अनिवार्य पहलुओं पर नीति बनाने वाले अध्येताओं को अपने सुझाव देते समय सनातन धर्म की कसौटियों को ध्यान में रखने की बात कही है। भारतीय वांग्मय इन अमृत तुल्य सूत्रों से भरा हुआ है। श्रेष्ठ नायकों के विचार कभी काल बाह्य नहीं कहे जा सकते। ■

व्योम डिजिटल सर्विसेज : विपरीत परिस्थितियों से निकली भारत की डिजिटल क्रांति

डॉ. प्रियंका सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

हर बड़ी क्रांति की शुरुआत एक छोटे विचार और एक बड़े संकल्प से होती है। व्योम डिजिटल सर्विसेज की प्रेरणादायक कहानी भी कुछ ऐसी ही है। भारत में जब डिजिटल इंडिया की अवधारणा मात्र नीति दस्तावेजों तक सीमित थी, तब व्योम डिजिटल सर्विसेज ने यह तय कर लिया था कि परिवर्तन केवल शहरों तक सीमित नहीं रहेगा। यह कंपनी सिर्फ तकनीक की बात नहीं करती, यह तकनीक को जीवन और जीविका से जोड़ने का आंदोलन है- विशेष रूप से उन लोगों के लिए, जो डिजिटल क्रांति से अब तक अछूते थे। भारत के डिजिटल विकास में एक बड़ा अंतर यह था कि शहरों में जहां टेक्नोलॉजी फल-फूल रही थी, वहीं गांवों और दूर-दराज के इलाकों में लोग आजीविका, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों से जूझ रहे थे। यही वह समय था जब 2007 में, भारत में OM2M और इंटरऑपरेबल इंटीग्रेटेड सर्विसेज को लांच करने की तैयारी हो रही थी और इसी दौरान व्योम डिजिटल सर्विसेज की कहानी शुरू हुई।

इस परिवर्तनकारी यात्रा के सूत्रधार बने नित्या पराशर और उनके पति कपिल पराशर, जिन्होंने अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में इस स्टार्टअप की नींव रखी। संसाधनों की कमी, तकनीकी असुविधाएं और सामाजिक अपेक्षाओं के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। उन्हें यह विश्वास था कि भारत को आत्मनिर्भर बनाना है तो तकनीक और सेवा दोनों को गांवों तक पहुंचना होगा।

व्योम की पहली पहल थी - ग्रामीण और दूरदराज इलाकों में एक विस्तृत सर्वेक्षण, जिसमें यह पाया गया कि वहां के लोग बेरोजगारी, कौशल की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव से जूझ रहे हैं। इस अध्ययन के आधार पर व्योम ने एक क्रांतिकारी कदम उठाया। सर्बिया की एक कंपनी के साथ संयुक्त उपक्रम के माध्यम से भारत के पहले 'स्मार्ट इंटीग्रेटेड सेंटर' की स्थापना की। इन केंद्रों का उद्देश्य था- वर्क फ्रॉम होम, अर्न वाइल लर्न (सीखते हुए कमाओ) जैसे मॉडल को ग्रामीण भारत में पहली बार लागू करना।

पर सिर्फ केंद्र खोल देना व्योम का उद्देश्य नहीं था। उन्होंने यह समझा कि यदि स्थानीय लोगों को ही सेवा प्रदाता बनाया जाए, तो यह बदलाव स्थायी हो सकता है। इसी सोच से व्योम ने एक अनूठा कदम उठाया। उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर उन्हें IoT, AI और M2M सेवाओं का स्थानीय वितरक और प्रतिनिधि बनाया। यह एक दोहरी उपलब्धि थी। जहां एक ओर ग्रामीण महिलाओं को सम्मानजनक काम मिला, वहीं दूसरी ओर गांवों में तकनीक और सेवा का एक भरोसेमंद माध्यम भी तैयार हो गया। इसके साथ ही व्योम ने M2M (Machine-to-Machine), AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता), IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) जैसी उन्नत तकनीकों पर आधारित परियोजनाएं शुरू कीं, जिनका लक्ष्य था। स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाना, कौशल प्रशिक्षण को सहज करना, और उद्यमिता को गांव तक पहुंचाना। आज जब हम स्मार्ट भारत की कल्पना करते हैं, तो उसकी नींव व्योम ने बहुत पहले ही रख दी थी।

व्योम डिजिटल सर्विसेज़ आज भारत की पहली एकीकृत सेवा और प्रशिक्षण प्रदाता कंपनी बन चुकी है। इसका मुख्यालय नोएडा में है, लेकिन इसकी पहुंच भारत के कोने-कोने में है। इस कंपनी ने अब तक दो लाख से अधिक प्रशिक्षुओं को भारत और विदेशों में प्रशिक्षण प्रदान किया है।

एनएसडीसी, ईएसएससीआई, एमएसएमई और एनआईईएसबड जैसे सरकारी निकायों के साथ साझेदारी ने इसे सशक्त आधार दिया, वहीं माननीय मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा "सर्वश्रेष्ठ डिजिटल कंपनी" के रूप में सम्मानित किया जाना इसकी गुणवत्ता और समर्पण का प्रमाण है।

आज व्योम, भारत सरकार की भारत 6G एलायंस का हिस्सा है, जो वैश्विक तकनीकी साझेदारों के साथ मिलकर भविष्य की संचार क्रांति की रूपरेखा तैयार कर रहा है। इसके साथ ही BHU और STPI जैसी संस्थाओं के साथ जुड़ाव ने व्योम को अकादमिक, तकनीकी और औद्योगिक क्षेत्रों का समन्वयक बना दिया है।

नित्या और कपिल पराशर की दूरदर्शिता और निष्ठा ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि इरादे बुलंद हों और दृष्टि व्यापक हो, तो एक छोटा सा विचार भी राष्ट्र निर्माण का आधार बन सकता है। व्योम आज केवल एक कंपनी नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार करने वाली एक ताकत है। ■

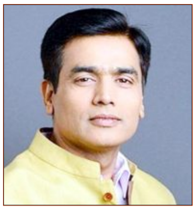

सईद अंसारी
एग्जीक्यूटिव एडिटर/एंकर, आजतक

संघ... आरएसएस यह शब्द सदा से कानों में गूंजता रहा। कभी लोगों की बातों में सुना, कभी दूर से देखा। लेकिन जब नजदीक गया, तो एक नई दुनिया खुली। संघ केवल संगठन नहीं, एक जीवन शैली है। संघ केवल अनुशासन नहीं, आत्मीयता है। संघ केवल विचार नहीं, एक संवेदनशील, जाग्रत और कर्मशील आत्मा है।

संघ को मैंने बहसों में सुना था पर अनुभव से अंछुआ था मेरे लिए संघ। लेकिन सभी के जीवन में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो आपको प्रभावित करते हैं। ऐसे ही कुछ लोग मेरे जीवन में भी हैं। उनके साथ कुछ मुलाकातें, कुछ आत्मीय रिश्ते और कुछ ऐसे व्यक्तित्वों से साक्षात्कार भी हुआ, जिन्होंने मेरे भीतर संघ के प्रति उत्सुकता पैदा की। संघ को जानने, समझने और संघ से जुड़ने की प्रेरणा दी। क्योंकि मैं एक पत्रकार हूँ इसलिए एक पत्रकार मित्र **डॉ. सौरभ मालवीय** जो आज लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के डीन हैं ने हाथ पकड़ कर संघ से परिचय करवाया। डॉ. सौरभ ने सबसे पहले संघ से जोड़ा । डॉ. मालवीय जी मेरे लिए केवल एक विद्वान या संघ-चिंतक नहीं हैं, वे वह 'द्वार' हैं जिससे मैं संघ के बौद्धिक संसार में प्रविष्ट हुआ। उनसे हुई बातचीत ने मुझे विचारों की उस यात्रा पर भेजा, जहाँ मैं केवल सुनने वाला नहीं रहा बल्कि अब मैं महसूस करने लगा। उनके भीतर की गंभीरता, सौम्यता और विचारों की गहराई मेरे संघ-संवाद की नींव बनी। मित्र ही अपना सबसे बड़ा हितैषी होता है। एक और मित्र **गोपीनाथ शर्मा** जिनके जैसे शुद्ध सात्विक संस्कारवान व्यक्ति ने दिल खोलकर सामने रख दिया। मित्रता को पारिवारिक संबंध में जब गोपी भाई ने बाँधा तो लगा इन संस्कारों के पीछे तो वो संघ है जिससे दूर रहने की दूसरे मित्र सलाह देते हैं। गोपी जी मेरे जीवन में उस समय आए जब मुझे एक ऐसा मित्र चाहिए था जो केवल व्यवहारिक नहीं, आत्मिक भी हो। उनका व्यवहार ऐसा है जिसमें व्यावसायिक कुशलता और संघ के मूल संस्कार एक साथ सांस लेते हैं। उनके साथ बैठकों में भोजन हो या विचारों की चर्चा, हर बार संघ के सादगीपूर्ण और संस्कारित जीवन की छाया दिखाई देती है। गोपी जी ने मुझे केवल मित्रता नहीं दी, बल्कि संघ की परंपरा का आत्मीय परिचय भी दिया-जैसे परिवार का कोई बड़ा भाई धैर्य और प्रेम से कोई मूल्य सिखाता है। मित्र जब आपके हित चाहने वाले हों तो गुरु भी मिलते हैं। ऋषि स्वरूप गुरुतुल्य **अभय महाजन जी** का व्यक्तित्व संघ की परिभाषा का चलता फिरता उदाहरण है। मेरी संघ-यात्रा के पथ प्रदर्शक अभय महाजन जी ही हैं। वे मेरे लिए केवल 'भैया' नहीं, बल्कि एक ऋषिसदृश मार्गदर्शक हैं। उनके भीतर का संतुलन, सात्विक जीवन और आत्मीयता ने मुझे संघ की आत्मा का पहला साक्षात्कार दिया। संगति का असर होता है। अभय भैया की छाया ने उनके जैसे ऋषियों की तरफ जीवन धारा को मोड़ा तो गुरुदेव उत्तम स्वामी जी महाराज के दिव्य प्रकाश ने आँखें चौंधिया दीं। गुरुदेव से मेरा रिश्ता केवल एक भक्त और गुरु का नहीं रहा, वह उससे भी गहरा है। जब उन्होंने मेरे सर पर हाथ रखा, उस स्पर्श में संघ की उस मौन शक्ति का एहसास हुआ जो केवल अनुभव से ही जानी जाती है। उनका सान्निध्य मेरे जीवन में एक आत्मबल की तरह है। एक ऐसा विश्वास कि जब भी डगमगाऊँगा गुरुदेव की आध्यात्मिक छाया मेरे साथ होगी। कष्टों आपत्तियों से रक्षा करेगी। संघ के एक ऐसे सच्चे निष्ठावान, निःस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले स्वयंसेवक **संजय जोशी जी** का सहज, सादा और अनुशासित जीवन, संघ कार्य के प्रति उनका समर्पण, कार्यकर्ताओं से आत्मीय जुड़ाव, पद और प्रतिष्ठा से ऊपर राष्ट्रहित को रखने का उनका भाव, नेतृत्व में सहयोग की भावना, विचारों की स्पष्टता और व्यवहार की विनम्रता, कठिन समय में धैर्य, युवाओं को आगे बढ़ाने की उनकी नीति और एक आदर्श स्वयंसेवक के रूप में उनकी प्रेरणादायक छवि ने मुझे गहराई से प्रभावित किया और संघ से जुड़ने की दिशा में प्रेरित किया। संजय जी का आत्मीय स्नेह शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं। निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करते हुए संजय जी को देखा। उनके घर पर उमड़ती भीड़ संजय जी के मददगार और मसीहा व्यक्तित्व ने संघ के प्रति प्रेम भाव भी जाग्रत किया। जिस स्नेह की वर्षा उन्होंने मुझ पर की उसके लिए संजय जी भाई साहब का सदा ऋणी रहूँगा ।

जब संघ में संजय जोशी जी जैसे समर्पित लोग हों तो उनकी छवि वाले कार्यकर्ता जुड़ते हैं। ऐसे लोगों में एक महत्वपूर्ण नाम

सांसद **महेंद्र सिंह सोलंकी जी** का है जिनसे मेरा रिश्ता केवल औपचारिक या राजनीतिक दायरे तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक आत्मीय, मित्रतापूर्ण और विश्वास से भरा संबंध है। वह दो बार के सांसद हैं, पूर्व जज हैं और एक युवा, ऊर्जावान नेता हैं। लेकिन इन सभी औपचारिक पहचानों से परे, उन्होंने मेरे जीवन में जो स्थान बनाया है, वह नितांत व्यक्तिगत और आत्मीय है। महेंद्र सिंह सोलंकी जी का व्यक्तित्व ही ऐसा है कि उनसे मिलते ही यह एहसास होता है कि सामने एक जनप्रतिनिधि नहीं, बल्कि एक सहज, सरल और सच्चे मित्र बैठे हैं। उन्होंने न सिर्फ मुझे हर जरूरत पर सहयोग देने की पहल की, बल्कि कई बार बिना कहे भी उन्होंने मदद का हाथ आगे बढ़ाया। उनकी यही संवेदनशीलता और मित्रता निभाने की प्रवृत्ति उन्हें दूसरों से अलग करती है। संघ के एक और विद्वान ने मुझे प्रभावित किया। संघ को कई लोग अतीत की परंपराओं में देखते हैं, लेकिन **मुकुल कानिटकर जी** ने मुझे सिखाया कि संघ केवल अतीत की स्मृतियों में नहीं है, वह भविष्य की संरचना में है। उनकी सोच, उनका शिक्षावाद और उनका हर कदम इस बात का प्रमाण है कि राष्ट्र निर्माण केवल नारों से नहीं, बल्कि शिक्षा, विचार और सतत् कर्म से होता है। मुकुल जी मेरे लिए सिर्फ एक शिक्षक नहीं हैं, वो विचार के शिल्पकार हैं। उनके शब्दों में गहराई होती है, लेकिन उनकी नीयत में और उनके कर्म में उससे कहीं अधिक स्पष्टता और प्रतिबद्धता दिखती है। वो उस पीढ़ी के नेतृत्वकर्ता हैं, जिन्होंने संघ के चिंतन को सिर्फ मंचों या पुस्तकों में नहीं छोड़ा, बल्कि उसे विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों और युवा मनों तक पहुँचाया।

मेरा गृहनगर इंदौर संघ का गढ़ है। इंदौर का सबसे बड़ा नाम **कैलाश विजयवर्गीय** है। कैलाश भैया ने मुझे संघ से जोड़ने में बड़ी भूमिका निभाई है। कैलाश विजयवर्गीय जी जमीन से जुड़े हैं, मानवता से भरा उनका दिल है। दिल्ली मीडिया में कैलाश जी और मेरा रिश्ता बहुत मशहूर है-इंदौरी रिश्ता। दिल्ली की मीडिया बिरादरी कैलाश जी को सिर्फ एक राजनीतिक व्यक्तित्व या वरिष्ठ बीजेपी संगठनकर्ता नहीं मानती, बल्कि उन्हें "सईदजी के भैया" कहकर बुलाती है जो एक अपनापन, एक आत्मीयता, एक सुरक्षा का एहसास देता है। वो दिल्ली मीडिया के जगत भैया हैं। करुणा और नेतृत्व का अनोखा संगम। आज भी जब कैलाश भैया गले लगाते हैं, वो वही गर्मजोशी, वही स्नेह, वही आत्मीयता महसूस होती है, जो 20 साल पहले महसूस होती थी। वो जब नाम कहकर पुकारते हैं, तो जैसे दिल को एक अदृश्य लेकिन मजबूत सुरक्षा का कवच मिल जाता है। कैलाश जी के ही अभिन्न अटूट मित्र, भाई और सब कुछ हैं

संघ को मैंने बहसों में सुना था पर अनुभव से अंछुआ था मेरे लिए संघ। लेकिन सभी के जीवन में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो आपको प्रभावित करते हैं। ऐसे ही कुछ लोग मेरे जीवन में भी हैं। उनके साथ कुछ मुलाकातें, कुछ आत्मीय रिश्ते और कुछ ऐसे व्यक्तित्वों से साक्षात्कार भी हुआ, जिन्होंने मेरे भीतर संघ के प्रति उत्सुकता पैदा की। संघ को जानने, समझने और संघ से जुड़ने की प्रेरणा दी।

रमेश मेंडोला जी। दादा का मैं बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ, फैन हूँ। अद्‌भुत व्यक्तित्व है रमेश जी का। शांत सौम्य सरल लेकिन साथ ही बेहद कड़क। अच्छे के साथ बहुत अच्छे। बुरों की तो दादा से रूह काँपती है। रमेश मंडोला जी का जीवन संघ के उन गुणों का प्रतीक है, जो सेवा, धर्म और सामाजिक उत्तरदायित्व को एक साथ जीते हैं। उन्होंने जो कुछ किया, वह दिखावा नहीं, एक मौन साधना रहा है। जब मैं उन्हें किसी सामाजिक कार्य में जुटे देखता हूँ, तो वह संघ की उस भावना को साकार करता है जो "निःस्वार्थ कर्म" का दर्शन है। रमेश जी के दर से कभी कोई साधु संत खाली नहीं गया। दादा जैसे व्यक्ति जिस संस्था, दल में हों उससे लगाव और जुड़ाव स्वाभाविक है। दादा के आचरण ने मेरे साथ भी यही किया।

कैलाश जी रमेश जी ने इंदौर के युवाओं को संघ के संस्कार दिए हैं जिसने युवा संघ कार्यकर्ता और मित्र **भावेश दवे** और **सचिन सांखला** का नाम सबसे ऊपर आता है। भावेश दवे जी जैसे युवा स्वयंसेवक संघ की नई पीढ़ी की सबसे सुंदर तस्वीर हैं। उनमें जो ऊर्जा है, जो देश के लिए कुछ कर गुजरने का जुनून है, वह प्रेरणा का स्रोत बन गया है। जब उनसे मिला, तो लगा कि संघ केवल अतीत की स्मृति नहीं, भविष्य की संभावना भी है। सचिन सांखला जी में भारतीयता एक 'जीवित आचरण' बनकर दिखती है। सचिन जी की पूजा पाठ, शुद्धता, आचार विचार प्रभावित करता है। भावेश और सचिन का हर मित्र भारतीयता, प्रेम, सम्मान का जीता जागता उदाहरण है। आदर्श युवा को देखना है तो इंदौर के इन युवाओं में से किसी का भी जीवन देख लीजिए। भावेश जी, सचिन जी और उनके साथी युवा संघ कार्यकर्ताओं ने मुझे ना केवल प्रभावित किया अपितु संघ के नजदीक लाने का काम किया।

संघ के प्रति लोगों को आकर्षित करना, संघ से जोड़ना, निरंतर संघ के प्रचार प्रसार में लगे लोगों में मेरे संपर्क के कुछ नाम उल्लेखनीय है। संघ से मेरा जो भी जुड़ाव बना, उसमें डॉ. **संजय पाठक जी** की भूमिका किसी मौन लेकिन मजबूत सेतु की तरह रही। वो निरंतर मिलते रहे, संवाद करते रहे, संघ के कार्यों, विचारों और गतिविधियों से सहज रूप से जोड़ते रहे। कभी कोई औपचारिक आग्रह नहीं, कोई दबाव नहीं सिर्फ उनका सरल व्यवहार, संघ के प्रति समर्पण और विचारों की स्पष्टता ही वह शक्ति थी, जिसने प्रभावित भी किया और प्रेरित भी।

संघ की परंपरा में कुछ ऐसे लोग हैं, जिनकी पहचान केवल उनके पद या भूमिका से नहीं होती, बल्कि उनके संपर्क, संवाद और समर्पण से होती है। **वेदपाल जी** ऐसे ही एक संघ प्रचारक हैं, सादगी में गहराई, मुस्कान में आत्मीयता और संपर्क में संगठन की ताकत। वो मिलते हैं, लेकिन केवल औपचारिकता

निभाने के लिए नहीं, बल्कि मन से जोड़ने के लिए। बिल्कुल इसी तरह **पद्म जी** हैं जिनके साथ हर संवाद में संघ का वह स्वरूप झलकता है, जो केवल शाखाओं तक सीमित नहीं, बल्कि रिश्तों, भावनाओं और विश्वास की डोर से समाज को बांधता है। मेरे जीवन में भी वेदपाल जी और पद्म जी का यही योगदान रहा। उन्होंने न केवल मुझे आत्मीयता से जोड़ा, बल्कि संघ की उस ऊँचाई तक पहुँचाया, जहाँ से संगठन का विराट स्वरूप और उसके विचारों की गहराई दोनों साफ दिखाई देती हैं। **मोहन भागवत जी** से मेरी एक से अधिक बार भेंट केवल एक अवसर नहीं थी, बल्कि वह पद्म जी, वेदपाल जी और राजीव तुली जी के भरोसे और सच्ची संगठन भावना का परिणाम थी। **राजीव तुली जी** का स्नेह, उनकी सरलता और उनका जोड़ने का अंदाज मुझे हमेशा यह सिखाता है कि संगठन केवल विचार नहीं, वो संबंधों की जीवित परंपरा है। ऐसे ही संघ समर्पित लोगों में डीयू की प्रोफेसर **डॉ. गीता सिंह जी** के साथ समय-समय पर चर्चा में संघ के प्रति यह महसूस होता है कि संघ केवल संगठन नहीं, वह एक जीवन दृष्टि है। गीता जी के व्यवहार में सेवा, समर्पण और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की जीवंत प्रेरणा झलकती है।

संघ केवल शाखा में खड़े होकर प्रार्थना करने से नहीं बनता, वह राजीव जी, पद्म जी, वेदपाल जी, सीए अमित जी , श्रीकांत गुर्जर जी, गाजियाबाद के विपिन त्यागी जी, मेरे ऑफिस के साथी गौरव, नीरज सिंह और अश्विनी शर्मा जैसे समर्पित प्रचारकों के प्रयास से बनता है, जो हर व्यक्ति को पहचानते हैं, जोड़ते हैं और प्रेरित करते हैं। मुझे तो खूब किया।

मीडिया विद्यार्थी हूँ, नोएडा में रहता हूँ तो भला **कृपाशंकर जी** भाई साहब से दूर कैसे रह सकता था। स्वयं को कृपा जी को सौप दिया। इतना सरल सहज आत्मीय व्यवहार मेरे प्रति कृपाशंकर भाई साहब का रहा। सादा जीवन उच्च विचार की अवधारणा तो कृपा जी ने मूर्तरूप की। कृपाशंकर जी के साथ का मेरा अनुभव एक आत्मीय संवाद जैसा है, जहाँ शब्दों से अधिक मौन की भूमिका होती है। उनके व्यवहार में जो गरिमा है, जो सहज अपनापन है, वह संघ के 'निजत्व' और 'संयम' का जीवंत उदाहरण है। मीडिया जगत के लोगों से घिरे रहने वाले कृपा जी की सौम्यता और संतुलन मुझे हर बार संघ की मूल भावना की याद दिलाता है ।

निजी जीवन में अपने व्यवहार से प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण दो नाम हैं। सीए और शिक्षाविद **वेद मित्तल जी** और बड़े उद्योगपति, भारत सरकार के फुटवियर और चमड़ा उद्योग विकास निगम के चेयरमैन **पूरन चंद डावर** जी।

वेद मित्तल जी के साथ साप्ताहिक भोजन वाली अनोखी मित्रता है। हम दोनों एक-एक रोटी दाल सब्जी खाते हैं और घंटों गप्पे हांकते हैं। वेद मित्तल जी की हर बात में गुरु की सीख होती है। वेद जी जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। वेद मित्तल जी वह व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने भारतीय जीवन मूल्यों को न केवल अपनाया बल्कि अगली पीढ़ी में भी आत्मसात कराया। उनके साथ बैठना, उनके परिवार से मिलना, और उनके बच्चों में जो संस्कृति दिखाई देती है। वह संघ के उस संस्कार-परंपरा का प्रतिबिंब है जो केवल शाखा में नहीं, परिवार की चारदीवारी में भी जीवित रहती है। वेद जी मेरे लिए एक ऐसे पथ-प्रदर्शक हैं, जिन्होंने मुझे सिखाया कि 'संघ जीवन' केवल शाखा की सीमा तक नहीं, जीवन के हर क्षण में है। मित्तल जी ने अपनी दोनों बेटियों को एक साधारण भारतीय परिवार के बच्चों की तरह पाला पोसा। दोनों में भारतीय संस्कृति के गुण कूट कूट कर भरे। बारहवीं क्लास तक बच्चों को टीवी से दूर रखा। पत्नी स्कूल की मालकिन हैं, दोनों बच्चियाँ उसी स्कूल में पढ़ रही हैं लेकिन दोनों को भनक तक नहीं लगने दी कि ये स्कूल उन्ही का है। उन्हें एक साधारण विद्यार्थी की ही तरह स्कूल भेजा। धन दौलत होने के बाद भी दोनों बच्चियों को कहा कि काम करोगी तो ही पैसा मिलेगा। कर्म ही पूजा है का सिद्धांत बच्चों को दिया। वेद मित्तल जी जैसे ही शुद्ध भारतीय पूरन चंद डावर जी हैं। इज्जत दौलत शोहरत के समुद्र में रहते हुए भी आम भारतीय मनुष्य की चिंता करते हैं। पूरन जी राजनैतिक विश्लेषक हैं, विद्वान हैं। पूरन जी के लेख हमारी सभ्यता संस्कृति के प्रति सम्मान भाव पैदा करते हैं तो साथ उनके हर लेख में हमारे देश के विकास, उद्योग- धंधे और आम लोगों की रोजी रोटी की चिन्ताएँ होती हैं। डावर जी में मैंने वो दुर्लभ संतुलन देखा जहाँ उद्योग और अध्यात्म एक ही दिशा में चलते हैं। वे न केवल एक सफल उद्योगपति हैं, बल्कि संघ की सनातन चेतना के संवाहक भी हैं। जब वे राष्ट्र, धर्म और समाज की बात करते हैं, तो वह कोई भाषण नहीं लगता। वह उनके अनुभव की पुकार लगती है। डावर जी से जुड़ाव मेरे लिए आत्मिक भी रहा और बौद्धिक भी। उन्होंने यह सिखाया कि राष्ट्रभक्ति केवल धर्म की बात नहीं, वह एक उद्यम की जिम्मेदारी भी हो सकती है। वेद मित्तल जी और पूरन चंद डावर जी गुरु हैं, मुझे मेरे जीवन को भारतीयता में दोनों ने रंगा है ।

आज जब मैं अपने जीवन में पत्रकारिता के मंच से समाज की आवाज बनने का प्रयास करता हूँ, तो कहीं न कहीं मेरे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले इन सभी मित्रगण, विद्वजन, संघ कार्यकर्ताओं का वह स्नेह, वह अपनापन और वह मार्गदर्शन मुझे राह दिखाता है। सच कहूँ तो यह सब उस कड़ी के रूप में सामने आए, जिन्होंने मुझे न केवल संघ की विचारधारा से जोड़ा, बल्कि उसे समझने, स्वीकारने और जीने की प्रेरणा भी दी। धन्यवाद। जय हिन्द। ■

सिकंदरपुर : एक बदला हुआ गांव

मोनिका चौहान
शिक्षिका

सिकंदरपुर गांव के हर आंगन में हरियाली मुस्करा रही है। किसी घर की क्यारी में टमाटर की लाली चमक रही है, तो कहीं तोरी की बेल अपनी हरी मुस्कान बिखेर रही है। बच्चों की पाठशाला अब खेत-खलिहानों में भी लग रही है। जहां वे किताबों के साथ-साथ बीज बोना, पौधों से बात करना और मिट्टी से प्यार करना सीख रहे हैं। गांव की दादी-गुलाबो अम्मा हर सुबह अपने आंगन में तुलसी, धनिया और पालक को देखकर भगवान का धन्यवाद करती हैं। 'अब तो बाजार जाना ही बंद हो गया है', वे मुस्कुराकर कहती हैं, 'जितना चाहिए, उतना अपनी बगिया से मिल जाता है, और सब जैविक है।'

आज गांव में बड़ी हलचल है। जिला पंचायत अधिकारी खुद आई हैं, कुछ अफसरों के साथ। पंचायत भवन में मीटिंग हो रही है। रेनू श्रीवास्तव जी कहती हैं-'आप सबने मिलकर ऐसा गांव बना दिया है, जो अब प्रेरणा है पूरे प्रदेश के लिए। मुख्यमंत्री जी ने 20 लाख रुपये प्रोत्साहन राशि दी है, ताकि यह गांव पर्यटन स्थल बन सके।'

लोग पहले तो चौंक जाते हैं-'गांव और पर्यटन? : फिर रेनू जी मुस्कराकर कहती हैं - 'आपका जीवन ही अब अनुभव बन रहा है। झोंपड़ी रेस्टोरेंट बनाए जा रहे हैं, जहां लोग आकर देसी खाना खाएँगे। और इनका संचालन करेंगी गांव की महिलाएं।'

महेन्द्र की बेटी कविता, जो अब तक घर के काम में ही लगी रहती है, पहली बार पंचायत की बैठक में बोलती है-'मैं और मेरी सखियाँ ये रेस्टोरेंट चलाएँगीं! हम गांव की रसोई से स्वाद और आत्मीयता दोनों देंगे।'

अब गांव में झोंपड़ियाँ बन गई हैं, रंग-बिरंगी-मिट्टी की सौंधी खुशबू से महकती हुई। शहरों से लोग आ रहे हैं-खेतों में घूमते हैं, नीम के पेड़ के नीचे बैठकर सरसों की साग-रोटी खाते हैं और कविता की बनाई आम की लौंजी की तारीफ करते नहीं थकते।

गांव की औरतें अब आत्मनिर्भर हैं। बच्चे पर्यावरण की बातें कर रहे हैं। और शहर से आए पर्यटक कहते हैं-'गांव है या कोई खुली किताब?'

सिकंदरपुर अब सिर्फ एक गांव नहीं है, एक जीवंत सपना है-जो हर दिन फल-फूल रहा है और दुनिया को सिखा रहा है, कि अगर मिट्टी से जुड़ो, तो भविष्य भी खिल उठता है।

आंगन का अखाड़ा

सहारनपुर की एक तंग-सी गली के आखिरी मोड़ पर एक घर है, और उस घर के आंगन में सुबह की पहली किरण के साथ धूल नहीं, सपने उड़ते हैं। आंगन की मिट्टी पर दो बच्चियाँ-साक्षी और नेहा कभी दोहरी पाट करती हैं, कभी धोबी पछाड़ लगाती हैं। उनकी उम्र भले ही 8 और 12 साल है, पर उनके कंधों पर एक ऐसा भार है, जो सिर्फ वजन नहीं विश्वास है। एक पिता का, जिसने कभी अपना सपना पूरा नहीं किया, पर हार भी नहीं मानी। पिता सुरेश पाल कभी खुद कुश्ती के अच्छे खिलाड़ी थे, लेकिन हालात, जिम्मेदारियाँ और कुछ अधूरी उम्मीदें उन्हें दंगल से दूर ले गईं। मगर एक दिन जब उन्होंने देखा कि छोटी साक्षी बड़ी नेहा को बिना सीखे ही 'कुश्ती की पकड़' में ला रही है, तो कुछ टूटे हुए सपने फिर जुड़ने लगे।

अब हर सुबह वह खुद पहलवान नहीं, कोच बन जाते हैं। अपने ही आंगन को अखाड़ा बनाकर, दीवारों को दर्शक और सपनों को लक्ष्य मानकर, वह अपनी बेटियों को सिर्फ दांव-पेच नहीं, हौसले की पहलवानी सिखा रहे हैं। मिट्टी के ढेर पर खड़ी नेहा कहती है, "पापा का सपना है कि हम ओलंपिक में गोल्ड लाएँ।" साक्षी मुस्कराते हुए जोड़ती है, "हम उनका सपना पूरा करेंगे, और अपना भी।" अब वो आंगन सिर्फ खेल का मैदान नहीं है, वो एक कर्मभूमि है- जहाँ हर पसीना एक वादा करता है, हर चोट एक सीख बनती है, और हर थाप कहती है- "हम बेटियाँ हैं, हम भी दंगल रच सकती हैं।"

संघ पद्धति के महत्वपूर्ण स्तम्भ है संवाद, समन्वय और सेवाभाव

वर्ष 2002 में तत्कालीन सरसंघचालक पूज्य सुदर्शन जी की प्रेरणा से मुस्लिम राष्ट्रीय मंच अस्तित्व में आया जो आज भी मुस्लिम समाज के मध्य राष्ट्रीय जागरण हेतु सक्रिय है। पूज्य सुदर्शन जी के प्रयासों से संघ की संवाद परम्परा को गति मिली।

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

संघ यात्रा की अपनी इस यात्रा में हम आ पहुंचे हैं अपने नौवें पड़ाव पर जिसमें वर्ष 2005 से 2015 तक के काल की चर्चा करेंगे। इस काल के प्रारंभ में तत्कालीन सरसंघचालक के. एस. सुदर्शन जी के नेतृत्व में भारतीय समाज के दो वर्गों, मुस्लिम और ईसाई समुदाय को लेकर विशेष मंथन हुआ। उन्हें राष्ट्र की सांस्कृतिक मुख्यधारा से जोड़ने हेतु विशेष यत्न किये गये। सुदर्शन जी मुस्लिम और ईसाई धर्मगुरुओं के साथ निरंतर संपर्क में रहे। इसी का परिणाम था कि दोनों समुदायों में संघ को लेकर जो शंकाएं पनपाई गयी थीं उनका उन्मूलन हुआ। बाद में सुदर्शन जी की प्रेरणा से 2002 में मुस्लिम राष्ट्रीय मंच अस्तित्व में आया जो आज भी मुस्लिम समाज के मध्य राष्ट्रीय जागरण हेतु सक्रिय है। पूज्य सुदर्शन जी के प्रयासों से संघ की संवाद परम्परा को गति मिली। 2 अक्टूबर 2002 को दिल्ली के केशव कुंज में एक विशिष्ट संवाद बैठक हुई जिसमें सीरिया, लीबिया, सूडान, ईरान तथा संयुक्त अरब अमीरात सहित 7 मुस्लिम देशों के राजदूत और राजनयिक उपस्थित थे।

अप्रैल 2004 में दिल्ली के युवा केंद्र में मुस्लिम महिलाओं के अखिल भारतीय सम्मेलन में पूज्य सुदर्शन जी ने प्रतिभागिता की। 2006 में गुजरात के सूरत में अतिवृष्टि से एक बड़ा क्षेत्र बाढ़ से ग्रस्त हो गया। प्राकृतिक आपदा के इस अवसर पर सदैव के समान इस बार भी स्वयंसेवकों ने मोर्चा सम्भाला और 4,000 बाढ़ग्रस्त परिवारों की सहायता की। इसी वर्ष पूर्वी आंध्रप्रदेश में भी बाढ़ पीड़ित 2,000 परिवारों के लिए संघ के स्वयंसेवकों ने राहत शिविर लगाकर तन-मन-धन से सेवा कार्य किया। यह वर्ष संघ के द्वितीय सरसंघचालक प.पू. श्री गुरुजी की जन्मशती के रूप में मनाया गया। श्री गुरुजी जन्मशताब्दी के निमित्त पूरे देशभर में हिन्दू सम्मेलन, समरसता बैठकों, सद्भावना सम्मेलनों और श्री गुरुजी के साहित्य का वितरण किया गया। श्री गुरुजी जन्मशताब्दी के देशभर के कार्यक्रमों का दिल्ली में विशाल हिंदू सम्मेलन से समापन हुआ। सम्पूर्ण देश में हिंदू सम्मेलनों में करोड़ों हिंदुओं का सहभाग हुआ। समरसता सम्मेलनों में 13,000 संत और विविध जाति संप्रदायों के 1,80,000 सामाजिक नेताओं का सहभाग रहा।

इसी वर्ष स्वयंसेवकों द्वारा 1857 की 150वीं वर्षगांठ मनाई गई। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की प्रेरणा से इसे 'सलाम 1857' के नाम से देश भर में मनाया। 10 मई को दिल्ली के मालवंकर हॉल में इस कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ जिसमें तत्कालीन सरसंघचालक सुदर्शन जी उपस्थित थे।

संघ की प्रेरणा से 7 अगस्त 2009 को 'लाल किले से लाल चौक' अर्थात् 'हजरत निजामुद्दीन से हजरत बल' की यात्रा की गयी जिसका उद्देश्य कश्मीर में अलगाववादियों को यह दर्शाना था कि भारत का मुस्लिम समुदाय देश की मिट्टी से जुड़ा है और राष्ट्रहित में देशवासियों के साथ है। इसी वर्ष श्री अयोध्या धाम में राम मंदिर के विषय को लेकर सुदर्शन जी की उपस्थिति में 200 मौलानाओं एवं इमामों ने सौहार्दपूर्ण मंथन किया। मार्च 2009 में पूज्य सुदर्शन जी ने स्वास्थ्य कारणों के चलते स्वयं को दायित्व मुक्त किया और 21

मार्च को उन्होंने तत्कालीन सरकार्यवाह डॉ. मोहन भागवत जी को पूज्य सरसंघचालक मनोनीत किया। मा. सुरेश भैयाजी जोशी सरकार्यवाह चुने गये।

28 सितंबर 2009 के दिन कुरुक्षेत्र के ऐतिहासिक संग्राम स्थल से संतों द्वारा 'विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा' प्रारम्भ हुई जिसका उद्देश्य भारत की कृषि प्रधान संस्कृति में गौ माता के महत्त्व, गौवंश के संरक्षण और संवर्धन के विषय को जन-जन तक पहुंचाना और गौरक्षा के लिए सरकार को सन्देश देना था। संघ ने अधिकृत रूप से इस यात्रा का समर्थन किया। इस अभियान के समर्थन में 8.34 करोड़ नागरिकों के हस्ताक्षर एकत्र किए गए, जिनमें 75,668 ईसाई और 10,73,142 मुस्लिम शामिल थे। 23,300 गांवों में संपर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए और 11,32,117 लोगों ने इसमें भाग लिया। 201 सांसदों और 867 विधायकों ने इस अभियान के समर्थन में हस्ताक्षर किए। 1,23,796 केंद्रों पर 'स्थानीय यात्राएं' आयोजित की गईं, जिनमें 1,48,46,274 नागरिकों ने भाग लिया। यात्रा में 26000 किलोमीटर की दूरी तय की गई। 9271 पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं और 141035 अन्य लोगों, कुल 150306 प्रतिभागियों ने यात्रा को सफल बनाया। यह यात्रा 17 जनवरी 2010 को नागपुर में संपन्न हुई। 108 दिन चली 'विश्वमंगल गो ग्राम यात्रा' ने देश का अनवरत भ्रमण किया और दस हजार उपयात्राओं ने पूरे देश को मथ डाला। गांव-गांव, गली-गली, नगर-नगर, डगर-डगर यात्राओं का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। इस यात्रा से विश्व के आधुनिक इतिहास में सबसे बड़े जनमत संग्रह के रूप में यात्रा का हस्ताक्षर अभियान स्थापित हुआ। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, रामानंदाचार्य, महामंडलेश्वर, अखाडे, जैन मुनि, बौद्ध भिक्षु, जैन मुनि एवं आचार्य, नामधारी संत, वाल्मिकी संत, राम सनेही सम्प्रदाय, गायत्री परिवार, ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, पातंजलीयोगपीठ, आर्ट ऑफ लिविंग, चिन्मय मिशन और आर्य समाज जैसे प्रतिनिधि संगठनों की सक्रिय भागीदारी से भारत का एकात्म भाव प्रगट हुआ। 2010 में उत्तर कर्नाटक में भयंकर बाढ़ आई, इस दौरान संघ के 2400 स्वयंसेवक राहत कार्य पर लगे और उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ पारस्परिक सामंजस्यता का परिचय देते हुए 180 गांवों को तत्काल राहत सामग्री पहुंचाई। इन लोगों के पुनर्वास हेतु सेवा भारती के तत्वावधान में 9 गांवों में 1680 घर बनाने का संकल्प लिया। इसी वर्ष पूज्य सरसंघचालक जी का देशव्यापी प्रवास हुआ, उनके प्रवास को लेकर स्वयंसेवकों में बहुत उत्साह रहा। केरल, मैंगलोर और महाकौशल जैसे स्थानों पर गणवेशधारी स्वयंसेवकों की संख्या 90,000 तक पहुंच गई। फरवरी 2011 में मध्यप्रदेश की प्राचीन नगरी मंडला में माँ नर्मदा सामाजिक कुंभ का आयोजन किया गया।

वर्ष 2006 - 2007, संघ के द्वितीय सरसंघचालक प.पू. श्री गुरुजी की जन्मशती के रूप में मनाया गया। पूरे देशभर में हिन्दू सम्मेलन, समरसता बैठकों, सद्भावना मिलन का आयोजन हुआ और स्वयंसेवकों द्वारा श्री गुरुजी के विचारों पर आधारित साहित्य का वितरण किया गया।

इसका उद्देश्य समाज और राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा हिन्दू समाज को कमजोर करने के प्रयासों के बारे में जन-जागरण करना था। इस आयोजन में 336 जिलों की 1179 तहसीलों के 4000 गांवों से 415 विभिन्न अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों तथा 400 अन्य सामाजिक समूहों ने प्रतिभाग किया। इस त्रिदिवसीय कुम्भ में लगभग 30 लाख तीर्थयात्रियों ने भी आस्थापूर्वक कुंभ में प्रतिभागिता की। 15 सितम्बर 2012 को पूर्व सरसंघचालक सुदर्शन जी ने अपनी पार्थिव देह त्याग दी। इसी वर्ष सुरेश भैया जी जोशी पुनः सरकार्यवाह के दायित्व पर चयनित किये गये।

2013 में पूरा देश स्वामी विवेकानंद की 150 वीं जयंती मना रहा था। संघ ने भी स्वामी विवेकानंद की जयंती को सार्धशती उत्सव के रुप में मनाया। इस उत्सव के अंतर्गत विवेकानंद केंद्र के साथ सक्रिय रुप से काम करते हुए संघ ने राष्ट्र निर्माण के इस महती कार्य में रामकृष्ण मिशन, गायत्री परिवार, शारदा मठ, चिन्मय मिशन, स्वामीनारायण संप्रदाय, जैन संस्थाओं जैसे आध्यात्मिक संगठनों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण प्रयासों का समन्वय किया और स्वामी विवेकानंद के संदेश को समाज के सभी वर्गों तक पहुंचाया, जिनमें विद्यार्थी, शिक्षक, प्रख्यात शिक्षाविद, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, रक्षाकर्मी, सेवानिवृत्त न्यायाधीश आदि शामिल थे।

2013 में देश ने एक और भीषण प्राकृतिक आपदा का सामना किया। चार धाम यात्रा के दौरान उत्तराखंड में भीषण प्राकृतिक आपदा में हजारों तीर्थ यात्री और स्थानीय निवासी काल को ग्रसित, घायल और बेघर हो गये। संघ के सैंकड़ों स्वयंसेवक राहत कार्यों में सम्मिलित हुए और भारतीय सेना को रक्षा कार्य में अनवरत सहयोग दिया। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा निस्वार्थ भाव से निर्बाध सेवाकार्य की पूरे देश ने प्रशंसा की। 2014—15 में संघ की शाखाओं का 33,222 स्थानों तक विस्तार हुआ और कुल 51,330 शाखाएं हो गईं। 2014 के आम चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने प्रचंड बहुमत के साथ विजय प्राप्त की। इस अवसर पर संघ की प्रतिनिधि सभा की बैठक में प्रस्तुत रिपोर्ट में कहा गया कि यह पहली बार है कि समाज ने भारतीय विचार और विचारधारा से प्रेरित एक राजनीतिक दल को सत्ता में लाकर अपनी आस्था व्यक्त की है। इस बैठक में देश के नवनिर्माण से सम्बंधित आगामी नीतियों को लेकर सरकार की दिशा क्या होनी चाहिए उससे सम्बंधित बिन्दुओं पर भी मंथन हुआ।

इस शृंखला में यहीं तक, अगली शृंखला में बात करेंगे संघ यात्रा के अगले पड़ाव की... ■

तीर्थ पर्यटनों का सामाजिक एवं आर्थिक योगदान

अशोक कुमार सिन्हा
पूर्व प्रशासनिक अधिकारी
एवं सचिव विश्व संवाद केन्द्र, अवध

संपूर्ण भारत में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के इतिहास को अपने आँगन में समेटे हमारे तीर्थ, मंदिर और पूजास्थल हमारी आस्था के केंद्र रहे हैं। हम अखंड भारत में बिखरे नदी, पर्वत, गुफाएँ, प्रकृति, शिखर, नदियों के उद्गम व संगम स्थल सहित देवी - देवताओं के प्रत्येक स्थानों पर अपना माथा टेकते आ रहें हैं। ये स्थान हमारे पयर्टन के अविभाज्य अंग हैं। काशी से गंगा जल लेकर सुदूर दक्षिण के रामेश्वर में शिवलिंग पर जलाभिषेक करने की परंपरा युगों से चली आ रही है। इसी प्रकार कन्याकुमारी समुद्र संगम का जल यात्री लेकर काशी, बद्रीनाथ, कैलाश मानसरोवर तक की यात्रा करते हुए जलाभिषेक करने जाते रहें हैं। ढाकेश्वरी, कामाख्या से लेकर हिंगलाज देवी के तीर्थस्थल, चारों धाम, बारह स्वयंभू ज्योतिर्लिंग, बावन शक्तिपीठ सहित लाखों तीर्थ स्थल अखंड भारत की सच्चाई बयान करतें हैं। सम्पूर्ण भरतखण्ड में नदियों के किनारे बसे सभ्यताओं के अवशेषों को हम पूजतें हैं। द्वारका में समुद्र के अंदर समाई द्वारकाधीश के मंदिर के समक्ष हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी डाइविंग करते हुए जाकर ध्यानस्थ अवस्था में पूजा करतें हैं। सनातन, बौद्ध, जैन, सिक्ख धर्मस्थलों व सांस्कृतिक स्थानों पर करोड़ों तीर्थयात्री अपनी आस्था के केंद्रों में दर्शन तथा पूजा के लिए जाते रहतें हैं। सावन का महीना जैसे ही प्रारम्भ होगा लाखों की संख्या में उत्तर भारत में कावड़ यात्राएँ प्रारंभ हो जायेंगी। प्रयाग संगम में 144 वर्ष बाद पड़ने वाले विशेष योग के महाकुंभ ने इस वर्ष विश्व कीर्तिमान बनाते हुए आस्था का ध्वज फहराया है।

कल्पना कीजिए कि यदि रामेश्वरम से समुद्र का जल ले कर काशी विश्वनाथ पर जलाभिषेक की परंपरा न होती या काशी से रामेश्वरम शिवलिंग पर गंगाजल चढ़ाने की परंपरा न होती तो उत्तर भारत से पैदल इतना कष्ट सह कर क्यों लोग लंबी-लंबी यात्राएं करते? कैसे इतनी दूरी के बीच में बोली जाने वाली भाषा, खानपान, रहन-सहन, संस्कृति, वेशभूषा से यात्री पर्यटक परिचित होते। देशाटन से सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता में वृद्धि होती है। परस्पर सामंजस्य का भाव पनपता है तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान से अखण्डता का भाव उत्पन्न होता है। सामाजिक समरसता की अनुभूति होती है। पुरी के जगन्नाथ मंदिर के दर्शन के उपरांत कच्चे भोजन (भात-दाल) का प्रसाद ग्रहण किया जाता है। वहाँ नारा लगता है कि "न जात न पात, जगन्नाथ जी का भात। वहां बिना भेदभाव के सभी भात दाल का प्रसाद व खिचड़ी खाते है। इससे सामाजिक समरसता को बल मिलता है। बद्रीनाथ केदारनाथ मंदिर में दक्षिण भारत के नंबूद्री ब्राह्मण और रामेश्वरम मंदिर में उत्तर भारत के पुजारी मुख्य पूजक होतें हैं। देश के चार स्थानों पर कुंभ मेले लगते है जिसमें बिना जाती-पांत, भेद भाव के सभी मत, पंथ , संप्रदाय और वर्ग के लोग पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं। इन्ही कुंभ के धर्म संसद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद ने यह प्रस्ताव पारित कराया कि "सभी हिंदू सहोदर हैं तथा कोई हिंदू पतित नहीं होता। छुआछूत यदि पाप नहीं है तो इस दुनिया में कुछ भी पाप नहीं है" कर्नाटक के उडुपी में प्रथम बार साधु संतों धर्माचार्यों ने और शंकराचार्यों ने यह नारा लगाया और प्रस्ताव पास किया कि छुआ-छूत हिंदू समाज में महा पाप है। इसे हिंदू समाज के हित में समूल समाप्त करना है। तीर्थ पर्यटन से यही भाव पनपता है और सम्पूर्ण समाज में फैल कर मान्यता भी दिलाता है।

आर एस एस के शतायुवर्ष में पंच प्रण का व्यापक सामाजिक परिवर्तन कार्यक्रम संचालित हो रहा है। इसमें परिवार प्रबोधन,

सामाजिक समरसता, पर्यावरण, स्व जागरण एवं नागरिक कर्तव्यों के प्रचार, प्रसार, संपर्क का अभियान चल रहा है। इसमें परिवार प्रबोधन के अंतर्गत भाषा-भूषा-भोजन-भजन-भवन और भ्रमण के कार्यक्रम व्यापक स्तर पर संचालित हो रहें हैं। इसमें भ्रमण का अर्थ है सभी परिवारों में संघ के स्वयंसेवक संपर्क करते हुए शताब्दी वर्ष में नागरिकों को संदेश देते हुए उन्हें प्रेरित करेंगे कि सभी परिवार देश के धार्मिक, सांस्कृतिक स्थानों का भ्रमण अधिक से अधिक करें। इसका उद्देश्य यही है कि तीर्थ पर्यटन से हिंदू समाज सामाजिक सांस्कृतिक रूप से अधिक से अधिक लाभान्वित हो कर आर्थिक रूप से देश-समाज को सशक्त बनाये। इससे समाज और विशेषकर देश की युवा पीढ़ी को देश, समाज, राष्ट्र और संस्कृति का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त होगा और उनका योगदान देश-संस्कृति के लिए बढ़ेगा।

जहां तक तीर्थ पर्यटन से आर्थिक योगदान में विकास और वृद्धि का प्रश्न है, यह तथ्य निर्विवाद है कि तीर्थाटन न केवल सांस्कृतिक, बौद्धिक और धार्मिक भावनाओं को सशक्त करता है, बल्कि स्थानीय आर्थिकी को भी निरंतर गति प्रदान करता है। दुनिया में ऐसे कई प्रमुख तीर्थ पर्यटन केंद्र हैं जिनके चहुमुखी विकास में तीर्थाटन ने महती भूमिका निभाई है। संसद में केंद्रीय पर्यटन मंत्री ने अवगत कराया है की विगत दस वर्षों में भारत के धार्मिक स्थलों में आवाजाही बढ़ी है। 2022 में घरेलू पर्यटकों का आंकड़ा लगभग 15 करोड़ के स्तर तक पहुंच गया। केवल वर्ष 2022 में पर्यटकों के माध्यम से 1,34,543 करोड़ रुपये प्राप्त हुए। यह वृद्धि 106.8 प्रतिशत है। केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय की पी आर ए एस एच ए डी यानी प्रसाद तीर्थयात्रा कायाकल्प एवं आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान जैसी पहल तीर्थाटन की आर्थिक संभावनाओं को भुनाने के सरकारी प्रयासों को समर्पित है। इस योजना के अंतर्गत 1586 से अधिक करोड़ रुपये के निवेश से 45 परियोजनाओं का काम पूर्ण हो रहा है। इन योजनाओं का उद्देश्य धार्मिक स्थलों के बुनियादी ढांचों को बेहतर बनाना है। वर्तमान में अयोध्या में राममंदिर पूर्ण हो जाने के बाद अयोध्या, वाराणसी, प्रयाग चित्रकूट सर्किट के कारण तथा मथुरा वृंदावन कॉरिडोर स्वीकृत हो जाने के कारण आसपास विकसित बुनियादी ढांचा स्थानीय अर्थव्यवस्था को पंख लगा रहा है। आवास खानपान परिवहन स्थानीय कुटीर उद्योगों की वस्तुओं की बिक्री, मालाफूल, आतिथ्य सत्कार, धार्मिक प्रतीकों, और रोजगार सृजन से इन क्षेत्रों का कायाकल्प हो रहा है। इन क्षेत्रों में विदेशी निवेश बढ़ें हैं। अयोध्या में महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा सहित कई हवाई अड्डों का निर्माण हुआ है। तेजी से निर्यात बढ़ रहें हैं। रामजन्मभूमि निर्माण न्यास के सचिव श्री चम्पतराय ने वर्ष 2024 में न्यास की और से सरकार को 4 करोड़ रुपये से अधिक का जीएसटी व बिजली बिल के मद में भुगतान करने की सूचना दी है।

सम्पूर्ण भरतखण्ड में नदियों के किनारे बसे सभ्यताओं के अवशेषों को हम पूजतें हैं। द्वारका में समुद्र के अंदर समाई द्वारकाधीश के मंदिर के समक्ष हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी डाइविंग करते हुए जाकर ध्यानस्थ अवस्था में पूजा करतें हैं। सनातन, बौद्ध, जैन, सिक्ख धर्मस्थलों व सांस्कृतिक स्थानों पर करोड़ों तीर्थयात्री अपनी आस्था के केंद्रों में दर्शन तथा पूजा के लिए जाते रहतें हैं।

संपूर्ण भारत में तीर्थ और मंदिर अपने-अपने क्षेत्र में सबसे अहम आर्थिक इकाई भी होते हैं। ये उपभोग के भी केंद्र होते हैं जहाँ नारियल, चंदन, चावल हल्दी तेल घी और फलफूल जैसे उत्पादों की भारी खपत होती है। दक्षिण भारत में मंदिर बैंक की भूमिका निभाते हैं। दूसरे देश से व्यापार को संचालित करने में मंदिर व्यापारियों को निधि उपलब्ध कराते हैं। गुजरात का हरसिद्धि माता मंदिर नाविकों और समुद्री व्यापारियों का संरक्षक माना जाता है। मंदिर कला के भी केंद्र होते हैं। नृत्यशाला और नाट्यशाला यहां पोषित होती है। इनके द्वारा कई आश्रमों का संचालन होता है। मंदिरों द्वारा कई सामाजिक गतिविधियाँ, विद्यालय और सांस्कृतिक केंद्र चलाए जाते हैं। यही कारण है कि विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारे मंदिरों को लूटा और ध्वस्त किया क्योंकि ये समाज के मजबूत समृद्ध केंद्र थे। इन मंदिरों से अधिकांश निम्न एवं मध्यम वर्ग आर्थिक रूप से लाभान्वित होते रहतें हैं। तीर्थों के महत्व द्वारा उत्पन्न हुए बाजार में बड़े व्यापारिक केंद्र और प्रसिद्ध उत्पाद विकसित हुए हैं। मथुरा में चाँदी के आभूषण, देवताओं के वस्त्र, तंजावुर में कासें की मूर्तियाँ एवं वस्त्र, कोल्हापुर में स्वर्णकारी उद्योग, पुरी की कोटकी व बोमकाई, महेश्वर की माहेश्वरी, नासिक की पैठनी, पाटन की पटोला, काशी की बनारसी सिल्क, कांचीपुरम की कांजीवरम, गौवाहटी की सियालकुची शैली की साड़ियां देस विदेश में बिकती हैं। पिछले वर्ष वाराणसी में 13 करोड़ यात्री तीर्थाटन पर पहुंचे। इसी वर्ष प्रयागराज में कुंभ के अवसर पर लगभग 65 करोड़ यात्री संगम में डुबकी लगाने पहुंचे। अयोध्या में इस वर्ष लगभग सात करोड़ दर्शनार्थियों के पहुंचने का अनुमान है।

काशी, उज्जैन, उत्तराखंड के चारधाम, मथुरा, गोरखपुर, प्रयागराज सर्किट, वैष्णौदेवी, विवेकानंद शिला स्मारक, बालाजी धाम, त्रिची, कामाख्या देवी, कोणार्क, कन्याकुमारी, मीनाक्षी, पुरी, रामेश्वरम, हरिद्वार, द्वारका, महाकाल, हरमंदिर साहब, दिलवाड़ा, कुशीनगर, श्रावस्ती, पशुपतिनाथ, गंगासागर, बोधगया, सभी सांस्कृतिक और आर्थिक अवसर के केंद्र बन गए हैं।तीर्थ स्थलों के निर्माण एवं जीर्णोद्धार से शेयर बाजार भी उत्साह से भर जातें हैं। हिंदू समाज अब यह माँग करने लगा है कि हिंदू मंदिर अब सरकारी नियंत्रण से मुक्त होने चाहिए। इनका सशक्त व्यवस्थामंडल बना कर पर्यटकों की सुविधा में वृद्धि तथा शिक्षा, चिकित्सा एवं संस्कृति विकास में योगदान बढ़ाना चाहिए। ■

न्याय पूर्ण व्यवहार और निष्पक्षता

डॉ. पूनम सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

मैं एक शब्द उठाता हूं- न्याय जो मरी हुई मछली की तरह मेरे हाथ से फिसल जाता है।
मैं दूसरा शब्द उठाता हूं- समानता जो पंख फड़फड़ा कर उड़ जाता है न जाने कहां।
मैं तीसरा शब्द उठाता हूं- जनतंत्र सर्पदंश से नीली पड़ चुकी है- उसकी आधी देह-जन (एकान्त श्रीवास्तव)

इस तल्ख उदासी की जुबानी पर हम अपने समय, समाज पर नजर डालें तो पायेंगे- न्याय, समानता और स्वतंत्रता ऐसे आचरणमूलक मूल्य हैं, जिनका विलोपन जनतंत्र की अवधारणा को आहत करता है। न्यायपूर्ण व्यवहार और निष्पक्षता ये दो ऐसे कारक हैं जो हमारे लोकतांत्रिक व्यवस्था का सम्यक संचालन करते है। न्यायपूर्ण व्यवहार- निष्पक्षता की नींव है और निष्पक्षता-न्यायपूर्ण व्यवहार को सुनिश्चित करने का एक तरीका है। ये दोनों एक दूसरे पूरक और अन्योन्याश्रित है। इतना ही नही, ये राजनीतिक और सामाजिक सत्ता के न्याय प्रणाली के महत्वपूर्ण पहलू हैं। न्यायपूर्ण व्यवहार वह मानवीय गुण है- जिसके द्वारा हम दूसरों की स्वतंत्रता, स्वायत्तता और गरिमा का सम्मान करते हैं। निष्पक्षता से यह प्रतिध्वनित होता है कि समाज को कैसे निष्पक्ष न्यायपूर्ण तरीके से संरचित और संरक्षित किया जाए?

सामान्यतः न्याय शब्द जहां सही होने के मानक अर्थ में प्रयुक्त होता है तो वहीं निष्पक्षता एक संज्ञानात्मक निर्णय क्षमता लेने के अर्थ में। जिसमें तर्क करना और निर्णय लेना दोनों शामिल है। इसके आलोक में बात करें तो न्याय की अवधारणा हमारे भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित है। भारतीय संविधान में न्याय के तीन प्रकार उल्लिखित हैं- पहला सामाजिक न्याय, दूसरा आर्थिक न्याय और तीसरा राजनीतिक न्याय। सामाजिक न्याय की प्रतिबद्धता है- अधिक से अधिक लोगों और असमान लोगों के प्रति समान व्यवहार करना। आर्थिक न्याय से अभिप्राय है सभी को समान आर्थिक अवसर देना, आर्थिक समानता और आर्थिक अक्षमता को दूर करना। राजनीतिक न्याय का अर्थ है मनमानी व्यवस्था से मुक्ति। सभी पर समान कानून व्यवस्था लागू करना।

अगर हम राजनीतिक अर्थ की बात करें तो न्याय का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को वह अधिकार देना, जिसका वह हकदार है। न्याय

अधिकार, ईमानदारी और कानून के पालन की पुष्टि से जुड़ा है। इसके साथ ही न्याय अतिमहत्वपूर्ण मानवीय भाव नैतिकता बोध और वैचारिक रूप से राजनीतिक अवधारणाओं से जुड़ा है। जहां न्याय का सम्बंध नैतिकता से जुड़ता है, वहां यह व्यवस्था से ज्यादा दायित्वबोध से जुड़ जाता है। देश, समाज, परिवार के प्रति हमारे दायित्व बोध। नैतिकता का अंतर्सम्बंध धर्म- अध्यात्म से जुड़ जाता है। भारतीय संस्कृति में ईश्वरीय न्याय की परिकल्पना लोक व्यवहार के नियमन से सम्बंधित है। जो बेहतर मानवीय संस्कृति को संरचित करें और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के लक्ष्य को प्राप्त करें।

कबीर जिस अर्थ में समानता की बात करते हैं वह तार्किक रुप से अकाट्य है- एक तत्त से सृष्टि रची है, कौन भला, कौन मंदा। अर्थात् ब्रह्म ने एक ही तत्व से पूरी सृष्टि की रचना की। अतः उस माटी से बने मनुष्यों में से भला कौन छोटा, कौन बड़ा हो सकता है? हम नैतिक हुए बिना न्यायी नहीं हो सकते। निष्पक्ष तो कतई नही। समाज के सभ्य और सुसंस्कृत मनुष्य होने के नाते इन मानवीय मूल्यों का नागरिक कर्तव्य के रूप में अनुपालन करना जरूरी है। इस नैतिक संवेदना को हम संस्कार, शिष्टाचार के रुप में अपनाते हैं।

एक सभ्य समाज अपनी प्रशासनिक व्यवस्था में न्याय के अस्तित्व के बिना रह ही नही सकता। न्याय का एक अर्थ है न्याय सम्बंधी कानूनों का समुचित पालन होना। न्याय और निष्पक्षता निकट से जुड़े हुए शब्द हैं। जिसे हम अपनी सुविधा के अनुसार कभी-कभी एक दूसरे के पर्याय मान कर भी इस्तेमाल कर लेते है। जबकि इन दोनों में एक बारीक फर्क है।

न्याय का एक तीसरा अर्थ मूल्यांकनपरकता। समाज हमसे एक ऐसे विवेकपूर्ण न्याय की अपेक्षा करता है जहां हम पारिवारिक और सामाजिक अर्थ में स्थिति, व्यक्ति और स्थान और अवसर विशेष के आधार पर सही से मूल्यांकन करें। इसमें मूल्यांकन का आधार उचित-अनुचित होने के प्रतिशत पर निर्भर करता है। मूल्यांकनपरकता के लिए समाज में सही या गलत की एक न्यूनतम सीमा लागू होनी चाहिए।

भारतीय संविधान में न्याय के तीन प्रकार उल्लिखित हैं- पहला सामाजिक न्याय, दूसरा आर्थिक न्याय और तीसरा राजनीतिक न्याय। सामाजिक न्याय की प्रतिबद्धता है- अधिक से अधिक लोगों और असमान लोगों के प्रति समान व्यवहार करना। आर्थिक न्याय से अभिप्राय है सभी को समान आर्थिक अवसर देना, आर्थिक समानता और आर्थिक अक्षमता को दूर करना। राजनीतिक न्याय का अर्थ है मनमानी व्यवस्था से मुक्ति। सभी पर समान कानून व्यवस्था लागू करना।

इसके अलावा न्याय का एक विकासवादी भी अवधारणा है। जो किसी न किसी राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विचारधाराओं धार्मिक, सांस्कृतिक असहिष्णुता की वजह से पैदा होता है। आज हाशिए के लोगों में प्रतिरोधी शक्तियां जितनी तेजी से स्पेस बना रहीं है, उसके परिणाम स्वरूप यह नई सदी विमर्शों की सदी बनती जा रही है। सामाजिक विकासवादी न्यायमूलकता के केन्द्र में न्यायपूर्ण व्यवहार और निष्पक्षता की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं की ही अनुगूंज है। समता, स्वतंत्रता, न्याय विमर्शो के बीज शब्द है, जो हाथ उठाये समाज और सत्ता से न्याय की गुहार लगा रहें हैं। न्याय की विकासवादी अवधारणा सामाजिक बाधाओं के विमर्श के रूप में विकसित होते है। जैसे स्त्री और दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, वृद्ध विमर्श। साहित्य और समाजशास्त्रीय विषयों के अध्ययन में यही अवधारणा अनेक विषय- रूपों में अभिव्यक्ति पा रही है।

किसी भी देश की न्याय व्यवस्था के गुणवत्ता की पहली कसौटी उसकी तटस्थता या निष्पक्षता है। यदि प्रशासन में निष्पक्षता बरती जाए तो बहुत सारे कानूनी मसलों को प्रशासनिक स्तर पर हल किया जा सकता है। न्यायपूर्ण व्यवहार और निष्पक्षता किसी भी राष्ट्र के बेहतर राजनीतिक जीवन के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं। एक समावेशी और निष्पक्ष न्याय प्रणाली के बिना हम लोकतांत्रिक समाज की कल्पना नहीं कर सकते। हमें सामाजिक समानता, आर्थिक अवसर और राजनीतिक निष्पक्षता को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक आचरण के रूप में न्यायपूर्ण व्यवहार को अपनाना होगा।

न्याय की दृष्टि व्यापक तब बनती है जब निष्पक्षता आकर खड़ी होती है। न्याय कहता है सभी को वह हक दो- जिसका वह हकदार है। निष्पक्षता कहती है- ठहरो! हक देंगे। मगर विवेकपूर्वक मूल्यांकन करके।

असमानता की बिसात पर बैठी दुनिया के लिए न्याय और निष्पक्षता इसलिए जरुरी हो जाते हैं कि लोगों के समूह के बीच लाभ व अवसर या बोझ व दायित्व कैसे वितरित किए जाएं? ये विवेक न्याय तुला बन जाता है जहां हम निष्पक्षता के द्वारा ही ये तय कर पाते हैं कि हमें किसको, कितना हक देना है? ■

महिलाओं में पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम एवं उसका प्राकृतिक उपचार

धर्मवीर सिंह
योगाचार्य एवं चिकित्सक

आज के यांत्रिक, भाग-दौड़ भरे जीवन में महिलाएँ अनेक भूमिकाएँ निभा रही हैं- एक माँ, एक पत्नी, एक बहन, एक कर्मचारी, एक गृहणी। किंतु इन भूमिकाओं को निभाते हुए वे अपने शरीर और स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना अक्सर भूल जाती हैं। परिणामस्वरूप आज महिलाओं में अनेक हार्मोनल समस्याएँ देखी जा रही हैं। उन्हीं में एक प्रमुख समस्या है- पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम (PCOS)। यह न केवल शारीरिक कष्ट देता है बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक स्तर पर भी महिलाओं को प्रभावित करता है।

एक योग शिक्षक होने के नाते मैंने यह अनुभव किया है कि योग, प्राणायाम, सही दिनचर्या और आयुर्वेदिक आहार संयम के माध्यम से इस समस्या को जड़ से उन्मूलन किया जा सकता है। आइए इसे गहराई से समझते हैं।

PCOS क्या है?

PCOS एक हार्मोनल विकार है जिसमें महिलाओं की ओवरी में छोटी-छोटी सिस्ट (गांठें) बन जाती हैं। यह समस्या मुख्यतः हार्मोनल असंतुलन के कारण उत्पन्न होती है।

PCOS के प्रमुख लक्षण : मासिक धर्म का अनियमित होना या रुक जाना, चेहरे, पीठ आदि पर अनचाहे बाल (हर्सूटिज्म), वजन बढ़ना, विशेषकर पेट के आसपास तैलीय त्वचा और बार-बार मुंहासे होना, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन और अवसाद, थकावट और नींद की समस्या आदि।

PCOS के मुख्य कारण : - अनियमित जीवनशैली, देर रात सोना, जंक फूड का सेवन, शारीरिक गतिविधियों की कमी तथा मानसिक तनाव से हार्मोनल असंतुलन उत्पन्न होता है।

आनुवंशिकता : परिवार में यदि किसी को PCOS है तो इसकी संभावना और बढ़ जाती है। इंसुलिन प्रतिरोध शरीर में इंसुलिन की अधिकता एंड्रोजन को बढ़ावा देती है।

प्राकृतिक उपचार : योग, प्राणायाम और दिनचर्या द्वारा समाधान- PCOS का इलाज केवल दवाइयों से नहीं, बल्कि एक समग्र और प्राकृतिक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। योग और आयुर्वेदिक जीवनशैली इसके लिए सबसे प्रभावी साधन हैं।

1. **योगाभ्यास :** योग शरीर को संतुलित करने का एक शक्तिशाली माध्यम है। यह न केवल तनाव को कम करता है, बल्कि ग्रंथियों (endocrine glands) को सक्रिय कर हार्मोन का संतुलन भी बनाता है।

भुजंगासन : पेट की मांसपेशियों और ग्रंथियों को मजबूत करता है।

नौकासन : मोटापे को कम कर मेटाबोलिज्म बढ़ाता है।

धनुरासन : रजोनिवृत्ति और प्रजनन प्रणाली को संतुलित करता है।

पश्चिमोत्तानासन : पेट की चर्बी कम करने में सहायक।

मलासन : पेल्विक एरिया में खिंचाव लाकर ओवरी की क्रिया को सशक्त करता है।

नियम : प्रत्येक आसन को 30 सेकंड से 1 मिनट तक स्थिर रखें, धीरे-धीरे समय बढ़ाएं। अभ्यास सुबह खाली पेट करना अधिक लाभकारी है।

2. **प्राणायाम और ध्यान :** तनाव PCOS को बढ़ावा देता है। प्राणायाम और ध्यान मानसिक स्थिति को शांत कर हार्मोन को संतुलित करते हैं।

अनुलोम-विलोम : नाड़ी शुद्धि के साथ हार्मोन संतुलन में सहायक।

कपालभाति : पाचन और मेटाबोलिज्म को सुधारता है, जिससे वजन नियंत्रित रहता है।

भ्रामरी प्राणायाम : नींद में सुधार

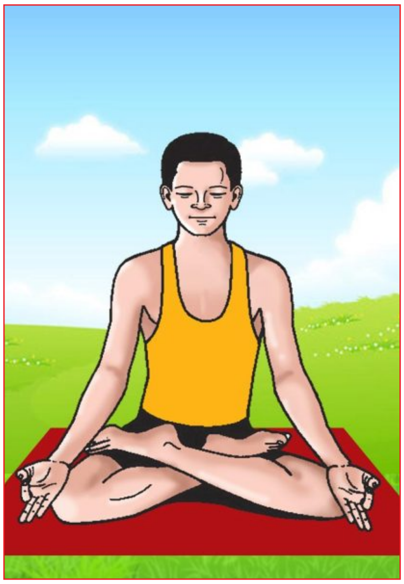

और मानसिक शांति प्रदान करता है।

योगनिद्रा : गहन विश्राम की प्रक्रिया, मानसिक थकावट और चिंता कम करती है।

3. **आयुर्वेदिक आहार और घरेलू उपाय :** सात्विक आहार अपनाएं, ताजे फल,

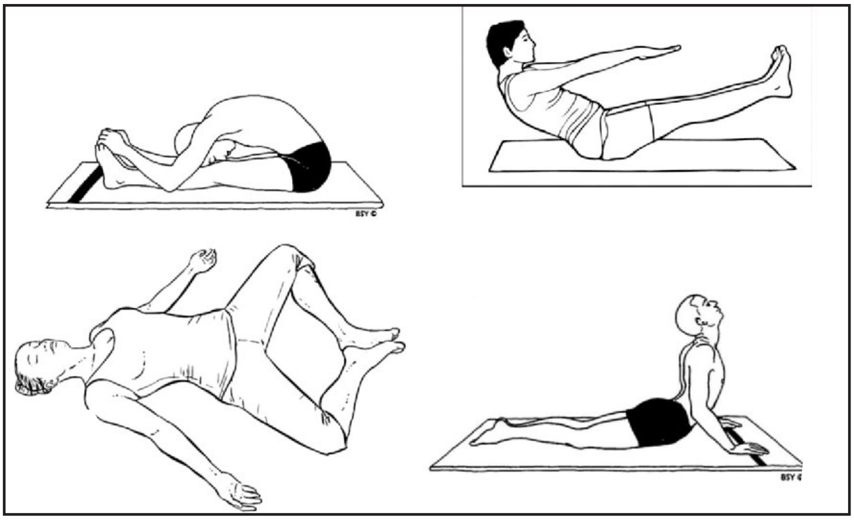

सब्जियाँ, साबुत अनाज और घरेलू भोजन। गर्म पानी में नींबू और शहद मिलाकर सुबह पीने से शरीर डिटॉक्स होता है।

मेथी दाना : रात को भिगोकर सुबह

महिलाएँ अनेक भूमिकाएँ निभा रही हैं- एक माँ, एक पत्नी, एक बहन, एक कर्मचारी, एक गृहणी। किंतु इन भूमिकाओं को निभाते हुए वे अपने शरीर और स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना अक्सर भूल जाती हैं। परिणामस्वरूप आज महिलाओं में अनेक हार्मोनल समस्याएँ देखी जा रही हैं। उन्हीं में एक प्रमुख समस्या है- पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम (PCOS)। यह न केवल शारीरिक कष्ट देता है बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक स्तर पर भी महिलाओं को प्रभावित करता है।

खाली पेट लें, इंसुलिन संतुलन के लिए उत्तम।

त्रिफला चूर्ण : रात को गर्म पानी के साथ लें, पाचन और शरीर की सफाई में सहायक।

शतावरी और अशोक की छाल का काढ़ा : महिलाओं की प्रजनन प्रणाली के लिए उपयोगी।

वर्जित खाद्य पदार्थ : मैदा, रिफाइंड तेल, तली हुई चीजें, चीनी, डिब्बाबंद खाना, शीतल पेय आदि।

4. **दिनचर्या :** अनुशासन में स्वास्थ्य।

प्रातः 5:30 से 6:00 के बीच जागना, सूर्योदय के बाद योग और प्राणायाम करना, नियमित समय पर भोजन करना, रात 9:30 तक सोना, दिन में एक बार ध्यान या योगनिद्रा करना तथा स्क्रीन टाइम सीमित करना।

PCOS कोई शारीरिक बीमारी मात्र नहीं, बल्कि एक जीवनशैली संबंधित चेतावनी है जो संकेत देती है कि शरीर और मन में असंतुलन हो गया है। यदि समय रहते ध्यान न दिया जाए तो यह बाँझपन, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, अवसाद जैसी गंभीर समस्याओं में बदल सकती है।

एक योग शिक्षक के रूप में यह अनुभव है कि योग और प्राकृतिक चिकित्सा की विधियाँ यदि नियमित, समर्पित और अनुशासित रूप से अपनाई जाएं तो PCOS जैसी स्थिति से पूर्णतः मुक्ति पाई जा सकती है। यह केवल चिकित्सा नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन का मार्ग है।'स्वस्थ नारी ही सशक्त समाज की आधारशिला है।'

आइए योग, संयम और संतुलित आहार को अपनाकर हर नारी को स्वस्थ और सशक्त बनाने की दिशा में कदम बढ़ाएँ। (लेखक के निजी विचार) ■

सांस्कृतिक विविधताओं को उजागर करते पर्व

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

भारत के सभी मंदिरों में भगवान गर्भ ग्रह में स्थापित रहते हैं पर हमारे जगन्नाथ जी मंदिर से बाहर गुढ़िंचा मंदिर मासी माँ के यहां जाते हैं। 27 जून को बहन सुभद्रा की नगर भ्रमण की इच्छा पूरी करने के लिए अपने भाई बलदेव के साथ अलग-अलग रथों में बैठ कर भक्तों को दर्शन देते हुए गए। वहां आठ दिन रहते हैं। दसवें दिन वापिस आते हैं जिसे बोहुडा यात्रा कहते हैं। ऐसा मानते हैं जैसे भगवान मथुरा से वृंदावन गए थे। भगवान तो सबके हैं लेकिन मंदिर में प्रवेश केवल हिन्दुओं को दिया जाता है। जिनके मन में भगवान के दर्शन करने की लालसा है। वे रथ यात्रा में जाकर मंदिर से बाहर भगवान के दर्शन कर सकते हैं।

अंतिम पूजा 24 जुलाई तक मनाया जाने वाला तेलंगाना का राज्य महोत्सव बोनालु हैदराबाद, सिकंदराबाद तेलंगाना के अलावा भारत के कई अन्य हिस्सों में आषाढ़ के एक महीने तक बहुत श्रद्धा से मनाया जाता है। आशाढ़ के प्रत्येक रविवार महाकाली के मंदिर से बाजे गाजे के साथ जलूस निकलता है। त्योहार के पहले और अंतिम दिन देवी येलम्मा के लिए विशेष पूजाएं की जाती हैं। मन्नत पूर्ति पर तो देवी को धन्यवाद देने के लिए बहुत जोर शोर से मनाया जाता है। 200 साल से बोनालू पारंपरिक लोक उत्सव की शुरुआत हुई थी। श्रद्धालुओं का मानना है कि एक बार प्लेग फैला था जिसका कारण देवी का रुष्ट होना है। उसके बाद से बोनालू में देवी को अच्छी फसल के लिए धन्यवाद करते हैं। अच्छी वर्षा और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं। वर्षा के कारण होने वाले संक्रमण से बचाने की प्रार्थना करते हैं। तेलंगाना राज्योत्सव पवित्र बोनालू उत्सव को भव्यता के साथ मनाने और भक्तों को उत्तम सुविधा उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार की ओर से नई मंदिर समिति का गठन किया गया है।

गुप्त नवरात्र का प्रयोग तन्त्र शक्ति उपासना के लिए होता है इसलिए इसे आषाढ़ गुप्त नवरात्र कहते हैं। इसे उत्तरी राज्यों में मनाया जाता है। 26 जून से शुरू हैं, 4 जुलाई को समापन होगा।

आषाढ़ मास में वर्षा का आगमन होता हैं इसलिए 1950 से जुलाई के पहले सप्ताह में सरकार देशभर में 'वन महोत्सव' (पेड़ों का त्योहार) का आयोजन करती है। इस दौरान स्कूलों कॉलेजों, प्राइवेट संस्थानों द्वारा पौधारोपण किया जाता है। जिससे लोगों में पेड़ों के प्रति जागरूकता पैदा होती है।

दश कूप सम वापी, दश वापी समोह्दः।
दशह्दसमः पुत्रो, दशपुत्रसमो द्रुमः।

दस कुओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है। मत्स्य पुराण का यह कथन हमें पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

जिस उत्साह से वन महोत्सव पर वृक्षारोपण किया जाता हैं। उसी तरह उनका संरक्षण भी किया जाना चाहिए। हमें बच्चों को भी बचपन से ही पर्यावरण से जोड़ना चाहिए।

3 जुलाई को शुरू होने वाली अमरनाथ तीर्थयात्रा में जाना भी हमारे यहां उत्सव माना जाता है। पहली बार यह 38 दिनों की अवधि के लिए है। पृथ्वी का सम्मान करने के लिए आदिवासी उत्सव खर्ची पूजा 3 जुलाई, त्रिपुरा का एक सप्ताह तक मनाया जाने वाला महत्वपूर्ण त्योहार है। इस त्योहार पर 14 देवताओं को शाही पुजारी नदी पर पवित्र स्नान करा कर वापिस मंदिर में स्थापित करते हैं। लोग देवताओं के साथ पृथ्वी की भी पूजा करते हैं। इसके दो सप्ताह बाद 19 जुलाई को केर पूजा, इस प्रक्रिया का अंतिम भाग है। इसमें वास्तु देवता के संरक्षक देवता केर का सम्मान किया जाता है।

देवशयनी एकादशी, थोली एकादशी, हरिशयनी एकादशी 6 जुलाई को है। इस दिन से सभी प्रकार के मांगलिक कार्यक्रम, विवाह आदि नहीं किए जाते हैं। मान्यताओं के अनुसार इसी दिन से भगवान विष्णु 4 महीनों के लिए योग निद्रा में जाते हैं। चौमासा शुरु हो जाता है और देवी देवता विश्राम को चले जाते हैं। इस अवधि में अत्यधिक वर्षा के कारण संत समाज एक ही स्थान पर रूक कर व्रत, ध्यान और तप करते हैं।

गुरु पूर्णिमा 10 जुलाई को भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दुओं और बौद्धों द्वारा अपने गुरुओं को कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। यह आध्यात्मिक और अकादमिक गुरुजनों को समर्पित परम्परा है।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा तिथि को खास माना जाता है। इस दिन गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। जीवन में गुरू का बहुत महत्व है। तुलसीदास जी रामचरित मानस में लिखते हैं

गुरू बिन भवनिधि तरे न कोई,
जो बिरंचि संकर सम होई।।

अर्थात् कोई स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के समान ही क्यों न बन जाए। बिना गुरू के उद्धार नहीं हो सकता। यही कारण है कि पूर्णावतार श्री राम, कृष्ण ने भी गुरू बनाए थे। अतः ऐसे गुरू की तलाश में रहना चाहिए जो हमारे अवगुणों को दूर करने में हमारी मदद करे। इस दिन अपने गुरू को यथासम्भव दक्षिणा देते हैं। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। गुरु वेदव्यास ने वेदों को लिखा, जिसे ब्रह्मा ने पढ़ा। उन्होंने पुराण भी लिखे। यह भी माना जाता है कि उन्होंने इस दिन ब्रह्म सूत्रों को पूरा किया। उनके जन्म दिन पर उसी दिन से एक दिन गुरुओं को समर्पित है। गुरु या शिक्षक वह होता है जो हमारे जीवन में मार्गदर्शक की तरह काम करता है।

11 जुलाई से सावन शुरू है और सावन में धरती हरियाली से ढक जाती है। नई बहू को पहले सावन में मैके भेज दिया जाता है। रिवाज है कि पहला सावन सास बहू इक्ट्ठे नहीं रहतीं हैं। हमारे लोकगीतों में भी हरियाली, सावन के झूले, रिमझिम वर्षा की फुहारों में झूलती गाती सखियां होती हैं। पहले छोटी आयु में बेटियों की शादी हो जाती थी। वह पहला सावन पुरानी सखियों के साथ मना जातीं हैं। श्रावण मास में भगवान शंकर की पूजा का विशेश महत्व है। सावन के पहले सोमवार 14 जुलाई से शिवभक्त कांवड लेने जा सकते हैं। फिर हरिद्वार या गोमुख से यात्रा आरम्भ होती है। कंधे पर कांवड़ में गंगा जल होता है और ये यात्रा कांवड़ यात्रा कहलाती है। जो कांवड़ लेने जाते हैं वे भगवा भेश में होते हैं। कोई शिवजी का गण बना होता है। सजा हुआ कावंड उठाए कांवड़िए का एक ही नाम होता है 'भोला'। यात्रा में भोले कंघी, तेल, साबुन का इस्तेमाल नहीं करते हैं। मार्ग में कांवड़ को धरती से नहीं छूना है। कांवड़ शिविर में उसे टांगते हैं और आराम करते हैं। यात्रा में इनके आपस में पारिवारिक संबंध भी बन जाते हैं। जो कांवड़ लेने नहीं जाते वे कांवड़ शिविर में सेवा करने जाते हैं। सावन की शिवरात्रि 23 जुलाई को शिवजी का जलाभिषेक किया जाता है।

उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और हिमाचल में साल में तीन बार मनाया जाने ने वाला पर्व हरेला (16 जुलाई) का सावन के महीने में बहुत महत्व है। पर्व के लिए पकवान बनाए जाते हैं उत्तराखंड में उड़द के पकौड़े बनाना जरूरी होता है। हरेला पर्व के दिन प्रकृति की रक्षा का संकल्प लेकर पौधे रोपे जाते हैं।

बेहदीनखलम (हैजा के दानव को भगाना) महोत्सव 11 से 14 जुलाई, 3 दिन तक चलने वाला मेघालय का त्योहार है। फसल बोने के बाद भगवान से अच्छी वर्षा, समृद्ध फसल के लिए प्रार्थना की जाती है। भगवान को बुलाने के लिए पारंपरिक पोशाक में सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं। अंतिम दिन 14 जुलाई को फुटबॉल मैच खेला जाता है। ऐसा मानना है कि विजेताओं की समृद्ध फसल पैदा होगी।

3 जुलाई को शुरू होने वाली अमरनाथ तीर्थयात्रा में जाना भी हमारे यहां उत्सव माना जाता है। पहली बार यह 38 दिनों की अवधि के लिए है। पृथ्वी का सम्मान करने के लिए आदिवासी उत्सव खर्ची पूजा 3 जुलाई, त्रिपुरा का एक सप्ताह तक मनाया जाने वाला महत्वपूर्ण त्योहार है।

सिंधारा तीज 27 जुलाई, जिसे हरियाली तीज भी कहते हैं। सावन में आने वाले इस त्यौहार में प्रकृति ने हरियाली की चादर ओढ़ी होती है। इस दिन को भोलेनाथ और माता पार्वती के पुनर्मिलन का दिन माना जाता है। यह महिलाओं का उत्सव है। सावन की बौछारों में हरे भरे पेड़ो पर झूले पड़ जाते हैं। कहीं कहीं यह उत्सव तीन दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन मायके से सिंधारा में घेवर मिठाई, मेहंदी, चूड़ियां आदि सुहाग की चीजे आतीं हैं। दूसरे दिन हरी हरी मेहंदी हाथ पैरों में लगाई जाती है। अगले दिन सौभाग्यवती महिलाएं पकवान बनाती हैं और हरी पोशाक पहने, श्रृंगार करके माता पार्वती की पूजा करती हैं। सास को बायना देकर उनसे आर्शीवाद लेकर सपरिवार भोजन करती हैं। कहीं कहीं पर इससे पहले दिन से निर्जला व्रत रखती हैं। नई बहू को मैके भेज दिया जाता है। तीज पर ससुराल से बहू के लिए सिंधारा जाता है।

27 जुलाई से हिमाचल के चंबा जिले में सावन की रिमझिम फुहारों के बीच में मिंजर मेले का आयोजन किया जाता है। सात दिन तक चलने वाले इस मेले में लगता है जैसे पुराने जमाने में आ गए हों। महिलाएं पुरुष पारंपरिक पोशाकों में अपने लोक नृत्य करते हैं। फसल उत्सव है। गेहूँ, धान, मक्की और जौ की बालियों को स्थानीय भाषा में मिंजर कहते हैं। इस मेले में सबसे पहले भगवान लक्ष्मीनारायण को मिंजर अर्पित की जाती है। उसके बाद अखंड चंडी महल में भगवान रघुवीर को इसे चढ़ाया जाता है। ऐतिहासिक चौगान में ध्वज चढ़ाने के बाद मिंजर का आगाज होता है।

नाग को हमारे यहां देवता की तरह पूजा जाता है। नागपंचमी (29 जुलाई) पर इनकी पूजा का विषेश दिन होता है। हमारे पूर्वजों ने इनकी पूजा करके हमें बताया है कि सभी सांप जहरीले नहीं होते हैं। इनको देखते ही मारना नहीं चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म सावन महीने के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को हुआ था। इस वर्ष 31 जुलाई को उनकी 528वीं जयंती है। इनके द्वारा रचित श्री रामचरितमानस और हनुमान चालीसा को घर में रखना शुभ मानते हैं। तुलसी जयंती को देश भर में संगोष्ठी और सेमिनार आयोजित किए जाते हैं। हरियाली धरती का सौन्दर्य है। उसी से हम सबका जीवन संभव है। और हमारा कर्त्तव्य है कि इसकी हरियाली को बनाये रखें। हमारे उत्सव हमें बताते हैं कि प्रकृति का महत्व हमारे जीवन के हर रंग में है। ■

राष्ट्रवाद की नई रेखाएं : विचार से व्यापार तक

सोनम लववंशी
स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी

राष्ट्रवाद अब केवल झंडे में सिमटी भावना नहीं, वह स्मृति बन चुका है जो स्वतंत्रता संग्राम की मशाल भी थी और आज के दौर में आम जन के विवेक का हिस्सा भी है। तुर्की और अजरबैजान द्वारा भारत के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय मंचों पर की गई टिप्पणियां केवल राजनीतिक मसले नहीं हैं, बल्कि यह उन राष्ट्रों के प्रति जनमानस की प्रतिक्रियाओं को भी जगा रही हैं, जो भारत की संप्रभुता पर सवाल उठाते हैं। इन प्रतिक्रियाओं में उपभोक्ताओं के बायकॉट की आवाजें शामिल हैं, जो अचानक उभरी भावना नहीं, यह एक ऐसे राष्ट्रवादी विचार का संकेत हैं जो अब सरकारी नीतियों या सीमा पर लड़ाई तक सीमित नहीं रहा। यह अब नागरिकों के निर्णयों में धड़कने लगा है। पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रवाद की परिभाषा बदल चुकी है। यह अब नारे लगाने या साल में एक दिन झंडा फहराने तक सीमित नहीं है, बल्कि हर उस छोटे-बड़े निर्णय में समाहित हो चुका है, जिसमें व्यक्ति देश के मान और हित को निजी सुविधा से ऊपर रखता है। अब भारतीय उपभोक्ता ब्रांड से पहले यह देखने लगा है कि वह वस्तु किस देश से आई है और उस देश का भारत के प्रति रुख क्या है। यह राष्ट्रवाद का नया चेहरा है जो विचारशील, सजग और विवेकशील है।

मीडिया रिपोर्ट्स की माने तो साल 2024 में ही 3 लाख 30 हजार से ज्यादा भारतीयों ने तुर्की में छुट्टियां बिताईं, जबकि अजरबैजान में घूमने वालों की संख्या 2 लाख 43 हजार से ऊपर रही। ये मात्र पर्यटक नहीं थे, बल्कि अरबों रुपये की पूंजी थी जो प्रत्यक्ष रूप से उन देशों की अर्थव्यवस्था को सहारा देती है, जो कश्मीर मुद्दे पर भारत का विरोध और पाकिस्तान का समर्थन करते हैं। आंकड़ों के अनुसार, एक भारतीय पर्यटक औसतन 1 लाख रुपये खर्च करता है यानी सिर्फ 2024 में ही भारतीयों ने तुर्की और अजरबैजान में करीब 4 हजार करोड़ रुपये खर्च किए। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या हम उन देशों की तिजोरी भरें, जो हमारी संप्रभुता को चुनौती देते हैं? क्या राष्ट्रवाद केवल जज्बा है, या फिर निर्णय लेने की दिशा भी? तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगान द्वारा लगातार कश्मीर पर भारत विरोधी बयान और अजरबैजान द्वारा इस्लामी सहयोग संगठन (ओआईसी) जैसे मंचों पर पाकिस्तान का साथ देना, भले ही कूटनीति के दायरे में आता हो, पर जब इन बातों का असर आम नागरिक की चेतना पर पड़ता है, तब जवाब भी जमीनी होता है। यही वजह है कि सोशल मीडिया पर बायकॉट तुर्किए और बायकॉट अजरबैजान जैसे ट्रेंड देशभर से समर्थन पा रहे हैं। यह बायकॉट कोई आवेश में लिया गया फैसला नहीं है। ये उस चेतना की अभिव्यक्ति है जो अब राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने लगी है।

राष्ट्रवाद अब युद्ध और वीरता के साथ खड़ा होने तक सीमित नहीं। यह अब उस मोबाइल ऐप को हटाने में दिखता है जो देश विरोधी ताकतों से जुड़ा है, या उस विज्ञापन को अस्वीकार करने में जो भारत की संस्कृति का उपहास उड़ाता है। चीन के खिलाफ उठी आवाजें इसकी मिसाल थीं, अब तुर्की और अजरबैजान की बारी है। यह राष्ट्रवाद प्रतिक्रिया नहीं है एक परिपक्व चेतना है जो अब देश के स्वाभिमान को बाजार में भी उतना ही मूल्य देती है जितना सरहद पर। भारत का राष्ट्रवाद कभी भी संकीर्णता की मानसिकता पर नहीं टिका रहा। यह वह विचारधारा है जो विविधता में एकता ढूंढ़ती है, जो सैनिक के बलिदान पर गर्व करती है तो संविधान के मूल्यों की रक्षा भी उतनी ही दृढ़ता से करती है। परिपक्व राष्ट्रवाद दूसरों को गिराने के लिए नहीं, स्वयं को उठाने के लिए होता है। और जब देश का नागरिक अपने छोटे-छोटे निर्णयों में इस चेतना को शामिल करता है, तो वही आत्मनिर्भर भारत की असली नींव बनती है। बायकॉट जैसे कदमों के आर्थिक असर सीमित हो सकते हैं, लेकिन इनके मनोवैज्ञानिक प्रभाव गहरे होते हैं। वे यह संदेश देते हैं कि भारत अब केवल एक बाजार नहीं, एक जीवित, सोचने-समझने वाला लोकतंत्र है। जब आम लोग विदेशी कंपनियों या देशों के प्रति अपनी नीतियां पुनर्विचार के लिए बाध्य करते हैं, तो यह बाजार की दिशा बदलने वाली ताकत बनती है। यह भावना सरकार को संकेत ही नहीं देती, उद्यमियों को भी प्रेरित करती है कि 'मेड इन इंडिया' अब केवल एक लेबल नहीं, गर्व का प्रतीक है।

हालांकि, राष्ट्रवाद को संतुलित रखना भी आवश्यक है। यदि यह भावना विवेक के बजाय उन्माद में बदल जाए, तो वह समाज में विभाजन और असहिष्णुता को जन्म दे सकती है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होते केवल हित होते हैं। इसीलिए राष्ट्रवाद के साथ विवेक का होना भी उतना ही जरूरी है जितना साहस का। जब भारत का नागरिक भावनाओं के साथ तार्किकता को जोड़ता है, तब ही वह वैश्विक मंच पर भारत की एक सम्मानित और सशक्त पहचान गढ़ता है। इसलिए तुर्की और अजरबैजान जैसे प्रसंग केवल द्विपक्षीय संबंधों की कड़वाहट नहीं हैं, ये याद दिलाने वाले अवसर हैं कि आज का भारतीय न केवल सजग नागरिक है, बल्कि विवेकशील राष्ट्रवादी भी है। यह राष्ट्रवाद अब इतिहास की धरोहर नहीं, वर्तमान की जीवंत शक्ति है जो निर्णयों को दिशा देती है, बाजार को नैतिकता से जोड़ती है, और दुनिया को यह बताती है कि भारत की चुप्पी अब उसकी कमजोरी नहीं, उसकी चेतना है। ■

नए और पुराने भारतीय आपराधिक कानूनों का तुलनात्मक अध्ययन

भारत में आपराधिक न्याय प्रणाली एक बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। लगभग डेढ़ सौ वर्षों से लागू भारतीय दंड संहिता (IPC), दंड प्रक्रिया संहिता (CrPC) और साक्ष्य अधिनियम (Indian Evidence Act) को अब नए अधिनियमों - भारतीय न्याय संहिता, 2023 (Bharatiya Nyaya Sanhita), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 (Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita), और भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 (Bharatiya Sakshya Adhiniyam) द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। पुस्तक इस ऐतिहासिक परिवर्तन को विधिक दृष्टिकोण से गहराई से विश्लेषित करती है।

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें न केवल पुराने और नए कानूनों की धाराओं की तुलनात्मक व्याख्या की गई है, बल्कि यह भी बताया गया है कि इन परिवर्तनों का समाज, न्यायिक प्रक्रिया और नागरिकों के अधिकारों एवं कर्तव्यों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। उदाहरणस्वरूप, भारतीय न्याय संहिता, 2023 में "देशद्रोह" (Sedition) जैसी धाराओं को समाप्त कर 'राजद्रोह' की नई परिभाषा दी गई है, जिससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संरक्षित करने की कोशिश की गई है।

नए कानूनों में प्रौद्योगिकी का अधिक उपयोग, जैसे कि इलेक्ट्रॉनिक सबूतों की स्वीकृति, FIR की ई-रिपोर्टिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग आदि को प्राथमिकता दी गई है, जिससे न्याय प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और सुलभ बन सकेगी। इस पुस्तक में इस बात को रेखांकित किया गया है कि किस प्रकार डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विधिक प्रक्रिया को अद्यतन किया गया है।

इसके अलावा, पुस्तक में यह भी चर्चा की गई है कि नए कानूनों में "महिला और बच्चों" की सुरक्षा हेतु विशेष प्रावधान

पुस्तक का नामः COMPARATIVE BOOKLET NEW CRIMINAL LAWS
लेखक : प्रशांत त्रिपाठी (अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली)

जोड़े गए हैं, जैसे कि यौन अपराधों में तेज सुनवाई और सजा की प्रक्रिया। वहीं दूसरी ओर, कुछ आलोचकों द्वारा यह चिंता भी जताई गई है कि नए कानूनों में पुलिस को अधिक शक्ति प्रदान की गई है, जिससे नागरिक स्वतंत्रता पर प्रभाव पड़ सकता है - इस पक्ष को भी निष्पक्ष दृष्टिकोण से पुस्तक में स्थान दिया गया है।

यह पुस्तक विधि के छात्रों, वकीलों, न्यायाधीशों, पुलिस अधिकारियों और आम नागरिकों के लिए अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह केवल संशोधित कानूनों की सूची नहीं है, बल्कि उसमें छिपे दर्शन, नीति और सामाजिक प्रभाव की विवेचना भी करती है।

अंततः, यह पुस्तक एक सेतु का कार्य करती है जो पुराने और नए कानूनों के बीच संवाद स्थापित करती है और यह समझने में सहायता करती है कि भारत की आपराधिक न्याय व्यवस्था किस दिशा में बढ़ रही है।

अधजल गगरी छलकत जाए

बात उन दिनों की है जब मैं हायर सेकेंडरी कक्षा में पढ़ता था, मैं वाणिज्य का विद्यार्थी था, मेरे साथ मेरी कक्षा में तीन सहपाठी और थे चंद्रशेखर, ओम प्रकाश, और रामचंद्र, मैं पढ़ने में औसत दर्जे का विद्यार्थी था, लेकिन मेरा मित्र ओम प्रकाश पढ़ने में हम सब से बहुत आगे चलता था, कभी-कभी मेरे तीनों मित्र मेरे घर पर आते थे तो हमारी सबकी बातें माँ सुनती रहती थी।

एक दिन माँ ने मुझसे कहा बेटा तुझसे एक बात कहनी है, तुझे तेरे मित्र ओम पर ही अधिक भरोसा करना चाहिए यह सच में पढ़ने वाला है और तुझे भी आगे बढ़ाने की सोचता है, बाकी जो तेरे दोनों मित्र हैं पढ़ते कम हैं बातें ज्यादा करते हैं। ऐसा मुझे लगता है मैंने कहा नहीं माँ, ऐसी कोई बात नहीं है! वह भी बहुत पढ़ते हैं माँ ने कहा देखना रिजल्ट आएगा तब बताना मुझे किसका रिजल्ट कैसा रहता है ?

क्योंकि जो ज्यादा बोलते हैं वे अधिक अच्छा नहीं कर पाते अच्छा करने वाले बोलते कम हैं, और काम ज्यादा करते हैं, माँ की बात को सहज में लिया, अधिक ध्यान नहीं दिया, हमारी वार्षिक परीक्षा के बाद बोर्ड का रिजल्ट आया तो सच में सबसे अधिक नंबर ओम साहू के ही थे फिर मेरे, फिर चंदू के थे। रामचंद्र के सबसे कम थे ।

मैंने माँ को कहा माँ रिजल्ट आ गया है और जब माँ ने हमारा सब का परिणाम जाना तो माँ ने तपाक से कहा मैंने कहा था ना तेरे से? यह रामचंद्र और चंदू दोनों अधजल गगरी थे बोलते ज्यादा थे। पढ़ते कम थे।

इसलिए देख ओम से तो पीछे ही रहे जो रहे, तुझसे भी पीछे रह गए परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए ईमानदारी से पूरा-पूरा पढ़ना पड़ता है। मनन करना पड़ता है, याद करना पड़ता है, तब सफलता मिलती है।

मैं समझ गया कि माँ यह कहना चाह रही थी कि बेटा जो अधूरे ज्ञान वाले होते हैं ज्यादा बढ़-बढ़ कर बातें करते हैं,वे अच्छा परिणाम नहीं दें पाते ।

मुझे तुरंत कहावत समझ में आ गई अधजल गगरी छलकत जाए।

विष्णु शर्मा 'हरिहर'

कविता

केसरिया है घाटी अपनी,
केसरिया ही माटी है।
शीश पाग का रंग केसरी,
केसरिया परिपाटी है।।

गिद्ध-चील से खिलजी सैनिक,
जिनके ऊपर झपटे हैं।
सतियों की वो जौहर ज्वाला,
लिये केसरी लपटें हैं।।

विजय भाव की प्यास केसरी,
अभी तलक है कंठों में।
बोली हर-हर महादेव की
गुम्फित अब भी घण्टों में।।

चेतक का वह त्याग अभी तक,
व्याप्त यहाँ की माटी में।
तैर रही है गंध शौर्य की,
हल्दी वाली घाटी में।।

राणा का था मान केसरी,
शान केसरी राणा की।
भर अंतस की भाव भूमि में,
आन केसरी राणा की।।

ध्वज केसरी पुनः बंधुओ,
फहरे अपनी घाटी में।
रंग केसरी घोलो फिर से,
वीर प्रसविनी माटी में।।

केसरिया ही रहे चतुर्दिक,
ऐसी मेरी 'आशा' है।
रण क्षत्राणी की केसरिया,
सुनो यही अभिलाषा है।।

-आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'

पाठकों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

प्रेरणा विचार पत्रिका के जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता जून, जुलाई एवं अगस्त 2025 में समाप्त हो रही है, वे पाठक अपनी सदस्यता के नवीनीकरण हेतु निम्न फार्म को भर कर या नीचे दिए गए QR CODE को स्कैन कर अपनी सदस्यता सुनिश्चित कर सकते हैं। फार्म हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या व्हाट्सऐप नम्बर (9354133754) पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नम्बर 9354133754 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

नाम.. मोबाइल नं. ....

डाक का पूरा पता...

....

....पिन कोड. ....

प्रेरणा विचार पत्रिका की सदस्यता लेने के लिए QR CODE स्कैन करें

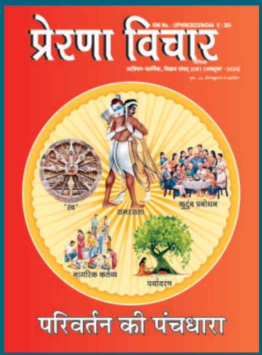

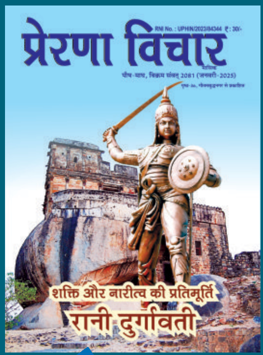

9354133754m@pnb

MERCHANT: PRERNA SHODH SANSTHAN NYAS

ऑनलाइन भुगतान के लिए लिए स्कैन करें

@PRERNAVICHAR
+919354133708

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

विभिन्न मंचों से प्रेरणा विचार पत्रिका का विमोचन